अक्टूबर-२०२० ◆ वर्ष ९ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ मासिक

अक्टूबर-२०२०

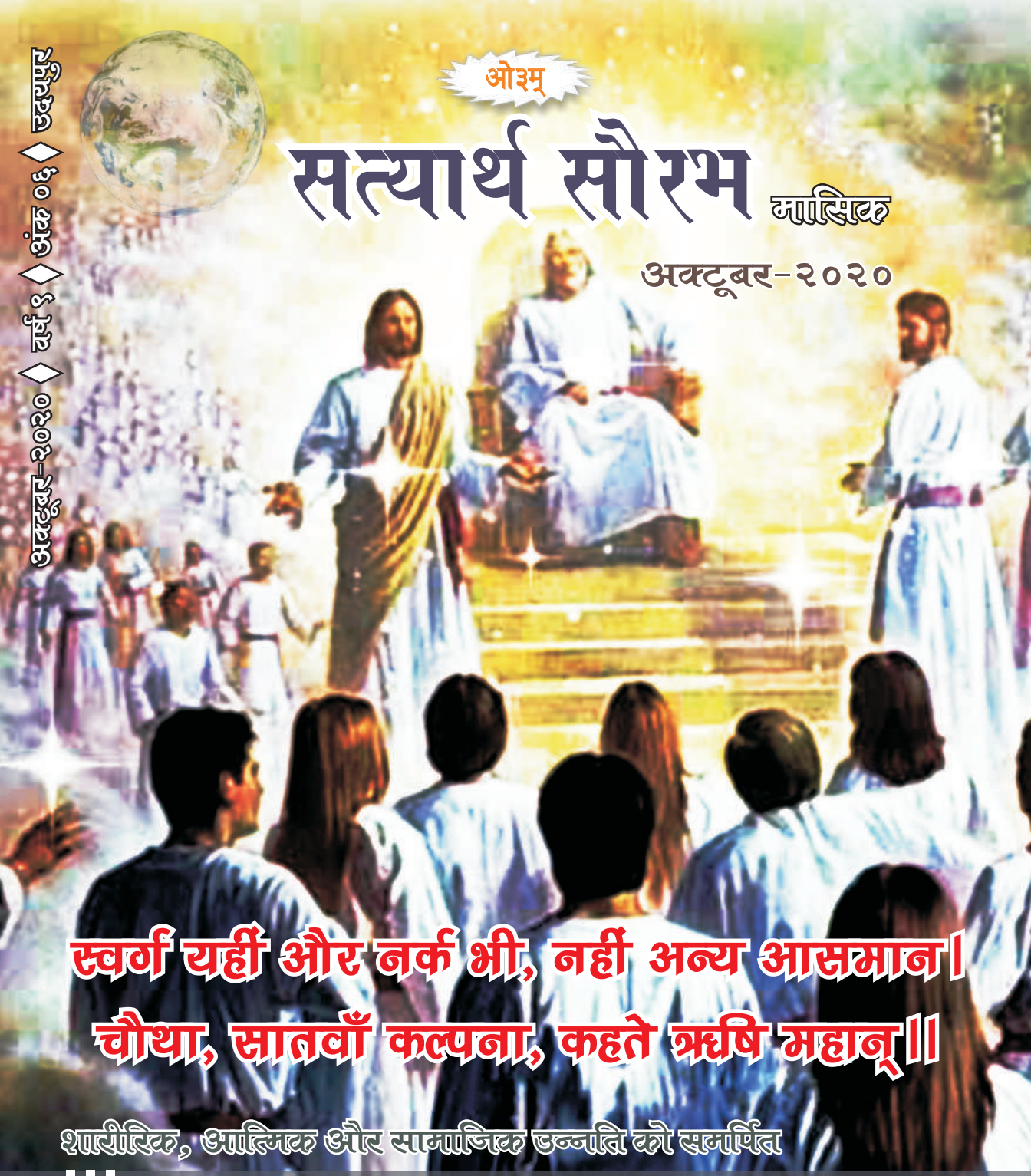

स्वर्ग यहीं और नर्क भी, नहीं अन्य आसमान।
चौथा, सातवाँ कल्पना, कहते ऋषि महान्॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१० १०८

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक

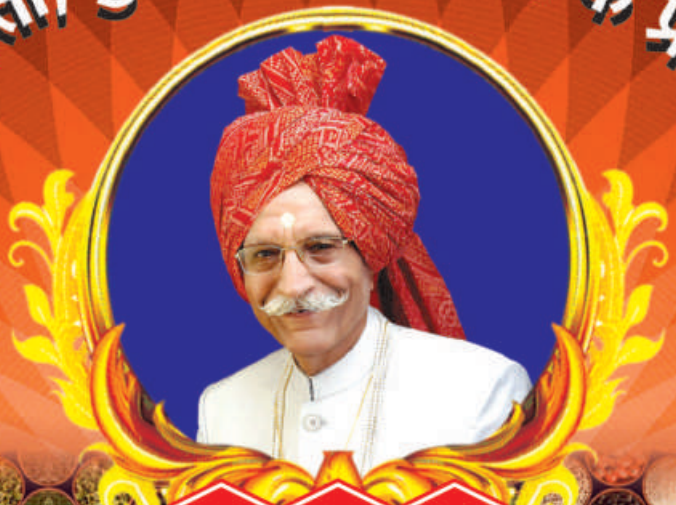

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले

असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

E-mail : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

ESTD.1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

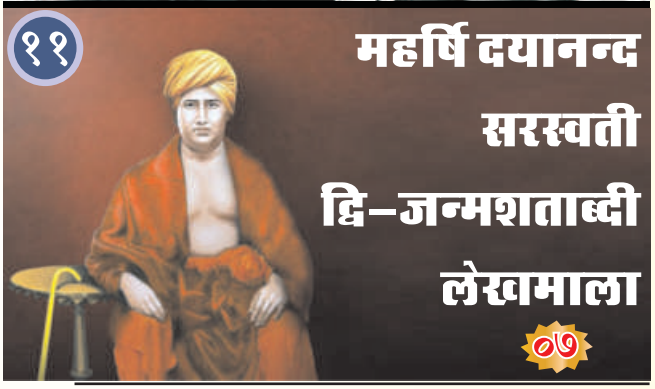

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	- 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२१
आश्विन शुक्ल पंचमी
विक्रम संवत्
२०७७
दयानन्दाब्द
१९६

October - 2020

समाचार २८
हलचल २९

०४ वेद सुधा
१२ शुद्धि और आर्य समाज
१८ जीवन का अस्तित्व कर्म .....
२० आज हमारी पाँच ....
२२ मुंशी प्रेमचन्द और आर्यसमाज
२५ बाघा जतिन
३० सत्यार्थ पीयूष- जीवात्मा

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं।सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर
वर्ष - ९ अंक - ०६
मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 07976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

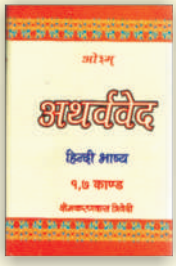

वेद सुधा

पापी का नाश होता है

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते।। - अथर्व. ८/४/१३

सोमः वा उ- शान्तिदाता प्रभु तो, **असत्**- झूठ, **वृजिनम्**- पापी को, **वदन्तम्**- बोलने वाले को, **न हिनोति**- नहीं प्रेरता है, **आ**- सर्वथा, **न**- (और) न ही, **हन्ति**- नष्ट कर देता है। **मिथुया**- झूठ को, **उभौ**- वे दोनों (पापी और झूठे), **धारयन्तम्**- धारण करने वाले, **इन्द्रस्य**- इन्द्र के, **क्षत्रियम्**- क्षत्रिय को (प्रेरता है)। **प्रसितौ**- बन्धन में, **रक्षः**- (वह) राक्षस को **शयाते**- पड़े रहते हैं। **हन्ति**- मार देता है।

व्याख्या- संसार में कई मत (पन्थ) ऐसे भी हैं जो यह कहते हैं कि परमेश्वर ने जिसको पापी बनाया है, वह पापी ही रहेगा, जिसको पुण्यात्मा बनाया है, वह धर्मात्मा ही रहेगा। ऐसे मतवादी सोचते नहीं। वे अनजाने में परमात्मा पर पक्षपात का दोष लगाते हैं। प्रश्न होता है, क्यों परमात्मा ने एक को पापी और दूसरे को धर्मात्मा बनाया? वे तो थे नहीं और न था कोई उनका पूर्व कर्म। फिर क्यों प्रभु ने- रहीम और रहमान भगवान् ने- ऐसा अन्याय किया? इसका कोई समाधान हो ही नही सकता। इस सिद्धान्त के मानने से यह मानना पड़ता है कि पापी को प्रेरणा करता है परमात्मा।

अब्रह्मण्यम्! शान्तं पापम्!! प्रभु और पाप की प्रेरणा! भगवान् तो **शुद्धम्-अपापविद्धम्** (यजुर्वेद ४०/७)= शुद्ध और पाप से अछूता है, वह पाप की प्रेरणा करेगा? सोच-विचार के बोल। प्रभु पर इतना बड़ा लांछन! मूढ़! अविचारक! बुद्धि को टटोल। भगवान् पाप की प्रेरणा नहीं करते-

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति।

अरे! वे तो तुझे पाप से सदा हटाते हैं। जब तेरे मन में पाप की गन्दी भावना पैदा होती है, वे तुझे रोकते हैं। वह जो पाप के विरुद्ध तेरे हृदय में आवाज-सी आती है, वह तेरी नहीं, तू तो पाप करने पर उतारू हो रहा है, तुझे रोकने के लिए भगवान् बोल रहे हैं, अतः हे प्रमादी! भगवान् पर पाप-प्रेरणा का लांछन मत लगा! पाप को भगवान् मार देते हैं- **हन्ति रक्षः।**

जिससे संसार बचना चाहता है अथवा जिससे बचना चाहिए, उसे रक्षः= राक्षस कहते हैं। पाप से बढ़कर राक्षस कौन हो सकता हैं? इससे स्वयं बचना चाहिए और बचाना चाहिए सारे संसार को। भगवान् जब अन्तरात्मा में पाप के वर्जन का आदेश करते हैं, मानो वे पाप को मार रहे हैं, किन्तु मनुष्य अपने अज्ञान और भ्रम के कारण उसे जिला देता है। पाप की उत्पत्ति परमेश्वर, अपापविद्ध परमेश्वर नहीं करता। वरन्-

अक्षद्रुग्धो राजन्यः पाप आत्मपराजितः। - अ. ५/१७/२

'जब मनुष्य का आत्मा हार बैठता है, तब इन्द्रियवर्ग विद्रोह कर देता है। उस समय पाप उत्पन्न होता है।' पाप की उत्पत्ति का प्रश्न सनातन है। जब से मनुष्य है, तभी से यह प्रश्न मानव के मन और बुद्धि को मथ रहा है। मनुष्य में मानो यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह अपनी त्रुटि का कारण, अपने मन में न खोजकर अन्यत्र खोजता है। यदि मनुष्य से कभी कोई भलाई हो जाए, तो उसका श्रेय स्वयं ले-लेने का यत्न करता है। सर्वत्र कहता फिरता है, देखा मेरा बुद्धि-वैभव, देखी मेरे प्रयत्न की प्रवीणता,

किन्तु यदि कोई कार्य बिगड़ जाय तो कहता है- 'प्रभु को यही इष्ट था। भगवान् के आगे किसकी चलती है?' सम्पूर्ण मतवादी पाप की उत्पत्ति का कलंक भगवान् पर लगाते हैं, किन्तु वेद ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में बताया कि पाप की उत्पत्ति आत्मा की दुर्बलता से होती है। आत्मा सर्वशक्तिमान् तो है नहीं। यह तो अल्पशक्तिमान् है। अल्पज्ञ है। अपनी अल्पज्ञता तथा अल्पशक्तिमत्ता के कारण आत्मा भूल कर बैठता है। यही भूल कर बैठना, पाप है। पाप की इस विवेचना से स्पष्ट सिद्ध होता है कि आत्मा अपनी स्वतन्त्र इच्छा से कार्य करता है, अतः उसका फल भी मिलता है। पाप का प्रेरक यदि कोई अन्य हो तो फल भी उसे ही मिलना चाहिए। पापोत्पत्ति का ऐसा युक्तिसंगत हेतु वेद और वैदिक ही बता सकते हैं।

सामान्यतः सभी पापों का वर्जन करके भी झूठ की क्रूरता के कारण उसका पृथक् निर्देश करते हैं-

न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्।

'झूठ धारण करनेवाले क्षत्रिय को भी प्रेरणा नहीं करता।'

परमात्मा तो है ही सत्यस्वरूप, वह असत्य की प्रेरणा करेगा? असम्भव। वेद में असत्य त्याग का व्रत है-

इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि। - यजुर्वेद १/५

'मैं इस अनृत= (झूठ) को छोड़कर सत्य को प्राप्त करूँ।'

अपने दोष दूसरों के मत्थे क्यों मढ़ते हो। 'झूठे को भगवान् की मार देते हैं- **'हन्त्यासद्वदन्तम्।'**

संसार में भी कहावत है- 'झूठे पर भगवान् की मार।' हमारे धर्मशास्त्रों में झूठ को सबसे बड़ा पाप कहा है-

नानृतात्पातकं परम्- 'झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है।' अतः असत्य का त्याग करना चाहिए।

किसी को सन्देह हो सकता है यहाँ- झूठे 'क्षत्रिय' को मारने की कही गई बात पर। क्षत्रिय से अन्य लोग भले ही झूठ बोल लें? ऐसी बात नहीं है। क्षत्रिय की ओर संकेत करने का विशेष प्रयोजन है। क्षत्रिय का अर्थ है- **क्षतात् त्रायते=** चोट से बचानेवाला, पीड़ा से छुड़ाने वाला। क्षत्रिय की सफलता पर-पीड़ा के दूर करने में है। पीड़ा पाप से होती है, अर्थात् जो मनुष्य समाज को पाप से छुड़ाए, वह क्षत्रिय है। अब जो पाप से छुड़ाने का व्रत लेकर स्वयं पाप में= सबसे बड़े पाप में= मिथ्याचाररूप महापाप में प्रवृत हो जाए, वह दूसरों को पाप से कैसे छुड़ाएगा? तात्पर्य यह कि शासक और उपदेशक यदि झूठ बोलेंगे, तो उनका सर्वथा सत्यानाश हो जाएगा। इसीलिए वेद ने कहा-

उभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते।

'दोनों महाबली इन्द्र के पाश में पड़ते हैं।'

भगवान् के विधान अटल हैं, उन्हें कोई नहीं तोड़ सकता। उसके दण्डविधान से बचने के लिए सभी प्रकार के मिथ्या से= मिथ्याहार, मिथ्योच्चार, मिथ्याचार, मिथ्याव्यवहार से- बचना चाहिए, अन्यथा बन्धन उपस्थित है।

- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
(साभार- स्वाध्याय-सन्दीप)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतनलाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, श्री सुदर्शन कुमार कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर

आत्म निवेदन

100 वर्षों में कुछ भी नहीं बदला

गतांक से आगे ......

तत्कालीन मुस्लिम मानसिकता भलीभाँति स्पष्ट हो जाय, इस हेतु लेख के बढ़ते आकार के भय से सिर्फ दो उदाहरण देंगे। पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लिखा है- 'अहमदाबाद में एक खास बात हुई और वह थी मुसलमान उलेमाओं का राजनीतिक मामलों में कांग्रेस को सलाह देना। व्यक्तिगत तथा सामूहिक सत्याग्रह की शर्तों के विषय में अहिंसा पर बहुत बहस-मुबाहिसा हुआ था- यह कि क्या मन वचन और कर्म से उस पर अमल किया जाये? यहाँ याद रहे कि कलकत्ता वाले प्रस्ताव में सिर्फ वचन और कर्म का ही उल्लेख स्वयंसेवकों की प्रतिज्ञा में था। 'मन' शब्द के जोड़ने पर मुसलमान उलेमाओं का ऐतराज था। उनका कहना था कि यह शरीयत के खिलाफ जाता है इसलिए 'मन' की जगह 'इरादा' शब्द रख दिया गया। इन सब मामलात में उल कुरान, शरीयत और हदीस के मुताबिक राजनीतिक विचारों और भावों का अर्थ और निर्णय करने में उलमा ने बहुत बड़ा काम किया। आगे चलकर हम देखेंगे कि कॉउन्सिल प्रवेश और उसकी कार्यवाहियों के बारे में भी उनकी राय और फतवे लिए जाते थे।'

वे लिखते हैं कि- 'इस खास बात का भारत की राजनीति पर बहुत गहरा असर पड़ा। देश में रहने वाले अनेक धर्मानुयायियों में से केवल एक वर्ग को इतना अधिक महत्व देने से राजनीतिक जल प्रवाह को एक ऐसा निचान का रास्ता मिल गया जो धीरे-धीरे नदी के रूप में परिणत होकर देश की सबसे कठिन समस्या बन गया।'

दूसरी महत्वपूर्ण घटना जिसका हम उल्लेख करना चाहेंगे वह है १९२० की हिजरत। संक्षेप में- हिजरत है क्या? जब किसी देश में मुसलमानों के धार्मिक विश्वासों को यथावत् रख पाना तथा उसका प्रचार-प्रसार सम्भव न रह पाय, तब, वह देश क्योंकि 'दारुल-हर्ब' (इस्लाम का शत्रु) हो गया है अतः उसका स्वेच्छा से त्याग कर किसी इस्लाम के मित्र देश 'दारुल-इस्लाम' में चला जाया जाय, यह हिजरत है, जैसा कि मुहम्मद साहब अपने साथियों सहित मक्का छोड़ मदीना चले गए थे, जो कि इस्लाम के इतिहास की प्रथम हिजरत थी। आप देखेंगे कि यहाँ धर्म मातृभूमि पर भारी है। जिस देश की मिट्टी में हमने जन्म लिया, पले-बढ़े उक्त कारण से उसे त्यागना पवित्र कार्य है, ऐसा मानना उस भावना से अलग है जिसमें मातृभूमि को माँ मानकर किसी भी परिस्थिति में उसका त्याग न करने का व्रत होता है तथा इस क्रम में प्राण त्याग देने का संकल्प होता है।

इस सोच के बाशिंदों के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम राम का कथन-

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।। - वाल्मीकि रामायण

कोई मायने नहीं रखता यह स्पष्ट है। जब यह स्पष्ट हो गया था कि अब खिलाफत नहीं बच पायेगी तब मौलाना आजाद आदि नेताओं ने सोचा कि असहयोग कितना होगा कितना नहीं, परन्तु मुसलमान हिजरत की आवश्यकता को अनुभव करते हुए

अगर हिन्दुस्तान का त्याग कर दें तो अपने आप पूर्ण असहयोग हो जाएगा। अतः उन्होंने मुसलमानों को हिजरत करके अफगानिस्तान जाने की प्रेरणा दी जो उस समय निकटस्थ 'दारुल-इस्लाम' था। और मुस्लिम हिजरत पर निकल पड़े। मातृभूमि के त्याग में कष्ट की अनुभूति न होने की इस मानसिकता पर चुटकी लेते हुए डॉ. श्रीरंग गोडबोले ने लिखा है-

'Saare jahan se accha, the poet Iqbal offers his view of the country of residence, "Ham bulbulen hain is kī, yih gulsitān hamārā" (We are its nightingales, and it is our garden abode). Birds flock to a garden to enjoy the fruit that hang from its trees. **They are certainly not obliged to stay there if the garden becomes desolate.'** वे आगे लिखते हैं कि मई से सितम्बर १९२० के मध्य लगभग ६०००० बुलबुलें हिन्दुस्तानी गुलशन को छोड़कर अफगानिस्तान चलीं गयीं।

वस्तुतः हिजरत का कुरआन शरीफ में स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है। जो लोग 'दारुल हर्ब' को त्याग कर 'दारुल इस्लाम' नहीं जाते हैं, और तरह-तरह के बहाने बनाते हैं उनके लिए लिखा है- '..... तुम किस हाल में थे? (.फिरिश्ते ने), उन्होंने कहा- हम जमीन में कमजोर (बेबस) थे (.फिरिश्तों ने कहा)- क्या अल्लाह की जमीन विशाल न थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते? तो ऐसे लोगों का ठिकाना दोजख है और वह पहुँचाने की बुरी जगह है। {कुरआन सूरा ३ आयत ८६}

आगे एक आयत और देखें- और जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत करेगा वह जमीन में पनाह लेने की बहुत जगह और सुविधाएँ पायेगा और जो कोई अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की ओर हिजरत करके निकले, फिर उसकी मृत्यु आ जाए, तो उसका बदला अल्लाह के जिम्मे हो गया। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

{कुरआन सूरा४ आयत १००}

मौलाना आजाद का फतवा-

In his fatwa, Azad said, "After taking into account all the provisions of the Shariat, contemporary events, the interests of the Muslims, and pros and cons (of political issues), I feel satisfied...**the Muslims of India have no choice but to migrate from India**.....(also non cooperation with Govt.) and one who fails to do this will, in accordance with the holy Quran also be counted as "the enemy of Islam"'.

उक्त फतवे व कुरआन के उपरोक्त निर्देशों के अनुक्रम में सहस्रों मुस्लिम भी अपने परिवारों सहित अफगानिस्तान के लिए निकल पड़े। अफगानिस्तान के अमीर ने प्रथम तो कोई ऐतराज नहीं किया परन्तु जब संख्या ज्यादा बढ़ने लगी तो उसने अपने दरबाजे बन्द कर लिए। इन लोगों ने जिन मुसीबतों को झेला, सैंकड़ों मर-खप गए, वह दर्द की एक लम्बी कहानी है। एक आधिकारिक रिपोर्ट से इसकी झलक मिल सकती है-

The road from the Frontier to Kabul was dotted with muhajirin graves. According to eye-witnesses, the Khyber Pass was littered with corpses (Dietrich Reetz, ibid, p. 69).

१२ अगस्त १९२० को अफगानिस्तान के अमीर ने हिजरत को स्थगित कर दिया।

उपरोक्त सारी कवायद के बारे में डॉ. बी.आर.अम्बेडकर जैसे विद्वान् के विचार जानना लाभकारी होगा- 'डॉ. अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'थाट्स ऑन पाकिस्तान' (1940) में लिखा, 'सच्चाई यह है कि असहयोग आन्दोलन का उद्गम खिलाफत आन्दोलन से हुआ, न कि स्वराज्य के लिए कांग्रेसी आन्दोलन से। खिलाफतवादियों ने तुर्की की सहायता के लिए इसे शुरू किया और कांग्रेस ने उसे खिलाफतवादियों की सहायता के लिए अपनाया। उसका मूल उद्देश्य स्वराज्य नहीं, बल्कि खिलाफत था और स्वराज्य का गौण उद्देश्य बनाकर उससे (बाद में) जोड़ दिया गया था, ताकि हिन्दू भी उसमें भाग लें।'

इसी प्रकार एनी बेसेंट के शब्दों में, 'खिलाफत-गाँधी एक्सप्रेस' का तूफान चला। यह आँधी ऐसी चली कि कांग्रेस की पिछली परम्परा झटके में उड़ गई।'

अब रह जाती है बात मुस्लिमों के हिन्दुओं के साथ अटूट भाईचारे की, सो जैसे ही खिलाफत के बारे में स्पष्ट हो गया कि यह लक्ष्य अब आकाश कुसुम हो गया है, इन भाइयों ने मालाबार में किस प्रकार हिन्दू-संहार व व्यभिचार किया कि उसकी कल्पना मात्र से रूह तक काँप जाती है। मालाबार दंगों में जिस प्रकार हिन्दू नरसंहार हुआ वह जहाँ अभूतपूर्व था वहीं गाँधी जी की एक्यभाव की जो धारणा थी वह कितनी खोखली थी यह भी उद्घाटित हो गया। पर गाँधी जी ने इससे सबक लेकर कुछ सीखा नहीं। इन दंगों का विस्तृत विवरण देना यहाँ सम्भव नहीं है। पर पाठकों की संक्षिप्त जानकारी के लिए कुछ प्रामाणिक जानकारी

दे रहे हैं-

दीवान बहादुर सी.गोपालन नायर जो कि कालीकट के डिप्टी कलेक्टर थे, ने १९२३ में एक पुस्तक 'The Mopalah Rebellion 1921' लिखी है' जिसमें एक अध्याय Atrocities नाम से है। उसमें मोपला विद्रोह के अन्तर्गत हिन्दुओं पर जो अत्याचार किये गए थे उसकी झलक देखने को मिलती है। मालाबार की महिलाओं द्वारा जो ज्ञापन शासन को दिया था उसके एक अंश को अनुवादित कर, आशय मात्र हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं जो स्थिति की भयावहता को स्पष्ट करने हेतु काफी हैं-

MEMORIAL SUBMITTED BY THE WOMEN OF MALABAR TO H.E. THE COUNTESS OF READING (An extract from which)

'आपको यह जानकारी होगी कि हमारे दुःखी जिले में जो मोपला लोगों ने कार्यवाही की है वह जितनी वृहद् और खूंखार थी उसका जैसा उदाहरण गत १०० वर्षों में नहीं मिलता। इन विद्रोही कहे जाने वालों ने जिस स्तर पर अत्याचार किये हैं हो सकता है आपको उसका सही अंदाजा न हो। क्षेत्र के अनेक कूएं इन अत्याचारों के शिकार हमारे निकटस्थ और प्रियजन लोगों के कटे-फटे शवों, आधे मृत और आधे जिन्दा शरीरों से पटे पड़े हैं, जिन्हें यह सजा इसलिए मिली कि उन्होंने अपने पूर्वजों के धर्म को त्यागना स्वीकार नहीं किया।

इन लोगों ने गर्भवती महिलाओं के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जिनके लोथड़े सडकों के किनारे और जंगलों में पड़े हैं, जिनकी कोख से अजन्मे शिशुओं के शव लटके हुए हैं, इसके अतिरिक्त क्रूरतापूर्वक इन लोगों ने हमारी बाहों से अबोध बच्चों को छीनकर हमारी आँखों के सामने ही मार दिया, हमारे पतियों और पिताओं को यंत्रणा दी गयी और जिन्दा जला दिया गया। हमारी बहिनों को जबरन उठा लिया गया और मनुष्य की क्रूर कल्पना जिस नरक के बारे में सोच सकती हो कौनसा ऐसा शर्मनाक और क्रूरतम दुष्कर्म था जो उनके साथ न किया गया। हमारे घर गिरा दिए गए। हमारे पूजास्थल अपवित्र किये गए और विनष्ट कर दिए गए, देवताओं की जिन मूर्तियों के गले में पुष्पहार पड़े हुए थे उनके स्थान पर गायों को काटकर उनकी आंतें निकाल कर उन्हें डाल दिया गया और फिर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। हमारी गाढ़ी मेहनत से कमायी पीढ़ियों से संचित समस्त संपत्ति लूट ली गयी नतीजा यह हुआ कि बहुत से लोग जो धन-सम्पदा में खेलते थे, वे कालीकट की गलियों में नमक, मिर्च, चावल खरीदने हेतु पैसा माँगने को विवश हो गए हैं, उन पर दया कर विभिन्न सहायता समूहों द्वारा उनकी सहायता की जा रही है। यह सब कहानी नहीं है।

कुँए सड़े हुए कंकालों से भरे हुए हैं, जो कभी हमारे प्यारे घर थे वे विनष्ट हो चुके हैं, हमारे पूजास्थल पत्थर के ढ़ेर में बदल चुके हैं। हममें से हजारों जिन्हें बलपूर्वक इन खून के प्यासे दरिन्दों ने अपने मत में धर्मान्तरित कर लिया है, आज भी नैतिक तथा आध्यात्मिक कष्ट का अनुभव करतीं हैं। हमारे सामने उन अभागी बहिनों के असहनीय तथा जीवनभर के दुःख का दृश्य हैं जो कि सम्मानित परिवारों में जन्मी, पली, बड़ी हुयीं, उन्हें इन दोषी कुलियों ने जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कर उनसे शादी कर ली है। गत पाँच महीनों में एक भी दिन ऐसा नही गया जब ये भयानक दृश्य अदृश्य हुए हों.....।'

मोपला विद्रोह के उपरान्त अनेक अपराधी पकड़े गए और उन पर मुकदमे चले। इन मुकदमों के अध्ययन से मोपलाओं द्वारा किये अपराधों का विवरण भी प्राप्त होता है जो अत्यन्त भयावह और अकल्पनीय है। मनुष्य-मनुष्य के प्रति किन भावों के अधीन ऐसी बर्बरता बरत सकता है यह समझ से परे है। ऐसे कुछ मुकदमों के विवरण उक्त पुस्तक में दिए हैं उनमें से एक हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं-

एक घटना नारायणन के घर पर आक्रमण की है। यह एक धनी भूस्वामी था। उसने अपने मोपला चौकीदारों पर विश्वास कर घर की सुरक्षा की जिम्मेदारी दे रखी थी, पर उन्होंने गद्दारी की। १४ नवम्बर २१ की रात को मोपलाओं की एक सशस्त्र भीड़ ने इनके घर पर आक्रमण किया और ७ लोगों को निर्ममता से काट कर रख दिया। एक लड़की तथा एक लड़के को अपने साथ ले गए, जिनको करीब ६ सप्ताह के बाद ढूढ़ लिया गया। इनके साथ जो दुर्दांत व्यवहार हुआ उसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। इन अपराधियों में से ५ लोगों को मौत की सजा तथा ५ को आजीवन कारावास देते हुए जज ने टिप्पणी की कि-

' To my mind this murderous attack indicate something more then mere fanicitism or lust for

looting. ……..the rebels seem to have meant to kill every male in the place whom they could catch hold of and the only survivors were those who either got away or were left as dead. The abduction of a young girl and a boy shows the deliberate ferocity of the attack. (Judgement in cases nos. 116 and 116A of 1922)

इतनी विकट परिस्थितियों में आर्यसमाज के नेताओं ने वह कार्य कर दिखाया जिसका इतिहास के पन्नों पर सदा के लिए अंकन हो चुका है अद्‌भुत व अविस्मरणीय। इस निमित्त 'आर्यसमाज व मोपला विद्रोह' नामक पुस्तक पठनीय है। आर्य समाज के कार्य के बारे में डॉ. विवेक आर्य लिखते हैं-

'आर्यसमाज के शीर्ष नेताओं को लाहौर में जब इस घटना के विषय में मालूम चला तो पंडित ऋषिराम जी एवं महात्मा आनन्द स्वामी जी को राहत सामग्री देकर सुदूर केरल भेजा गया। वहाँ पर उन्होंने आर्यसमाज की ओर से राहत शिविर की स्थापना करी जिसमें भोजन की व्यवस्था की गई। जिन्हें जबरन मुसलमान बनाया गया था उन्हें शुद्ध कर वापिस से हिन्दू बनाया गया। आर्यसमाज के रिकार्ड्स के अनुसार करीब ५००० हिन्दुओं को वापिस से शुद्ध किया गया। इस घटना का यह परिणाम हुआ कि हिन्दू समाज में आर्यसमाज को धर्मरक्षक के रूप में पहचाना गया। जो लोग आर्यसमाज के द्वारा की गई शुद्धि का विरोध करते थे, वे भी आर्यसमाज के हितैषी एवं प्रशंसक बन गए।'

यहाँ अब यह देखना उचित होगा कि जो गाँधी खिलाफत के समर्थन से हिन्दू-मुस्लिम एकता को दृढ़ आधार प्रदान करना चाहते थे क्या वे मोपलों के इस कुकृत्य के बाद भी उनकी मानसिकता को पढ़ पाए? जी बिलकुल नहीं। इस निकृष्टतम काण्ड के पश्चात् भी वे सत्य को प्रकट करने से बचते रहे। प्रतिक्रया भी दी तो घुमा-फिराकर।

'……मेरा मानना है कि हिन्दुओं को मोपला के पागलपन को समभाव के रूप में लेना चाहिए और जो सभ्य मुसलमान हैं उन्हें मोपला मुसलमानों को नबी की शिक्षाओं को गलत अर्थ में लेने के लिए क्षमा माँगनी चाहिए।' स्पष्ट है यह मात्र लीपापोती थी। कांग्रेस की प्रतिक्रया भी लीपापोती की रही। इसी कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी का भी कांग्रेस की नीतियों से

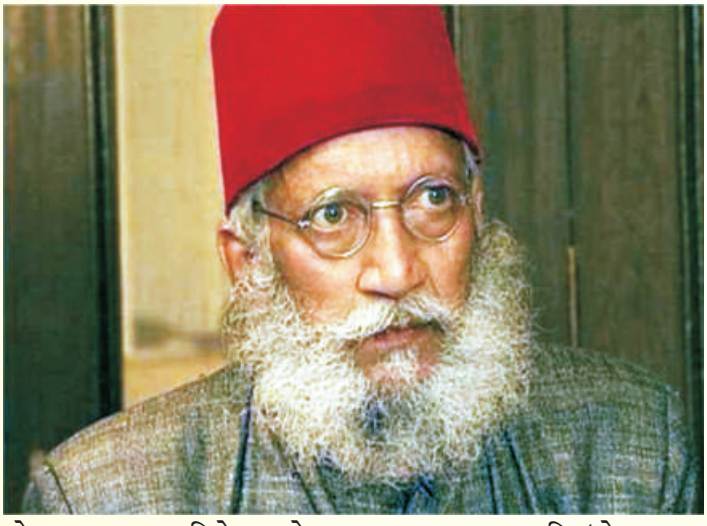

मोहभंग हो गया। स्वामी श्रद्धानन्द लिखते हैं-

'मुझे सबसे पहला आभास तब हुआ जब कांग्रेस की सब्जेक्ट कमेटी में मोपलाओं द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार के लिए निन्दा प्रस्ताव रखा गया था। तब उस प्रस्ताव को बदल कर 'मोपला मुसलमानों' के स्थान पर 'कुछ व्यक्तिगत लोगों द्वारा किया गया कृत्य' करार दिया गया। प्रस्ताव में परिवर्तन का आग्रह करने वाले कुछ हिन्दू भी थे। परन्तु कुछ मुस्लिम सदस्यों को भी नामंजूर था। मौलाना फकीर और अन्य मौलाना ने स्वाभाविक रूप से इस प्रस्ताव का विरोध किया। परन्तु मेरे आश्चर्य की सीमा तब न रही जब मैंने राष्ट्रवादी कहे जाने वाले मौलाना हसरत मोहानी को इस प्रस्ताव का विरोध करते सुना। उनका कहना था कि 'मोपला अब दारुल-अमन नहीं बल्कि दारुल-हर्ब है। वहाँ के हिन्दुओं ने मोपला के शत्रु अंग्रेजों के साथ सहभागिता की है। इसलिए मोपला मुसलमानों का हिन्दुओं को कुरान या तलवार देने का प्रस्ताव उचित है। और अगर अपने प्राण बचाने के लिए हिन्दुओं ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो यह स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन कहलायेगा नाकि जबरन धर्म परिवर्तन' अन्त में नाममात्र का निन्दा प्रस्ताव भी सहमति से स्वीकार नहीं हो पाया। अन्त में वोटिंग द्वारा प्रस्ताव स्वीकार हुआ जिसमें बहुमत प्रस्ताव के पक्ष में था। यह प्रकरण एक बात और सिद्ध करता था कि मुसलमान, कांग्रेस को अधिक बर्दाश्त करने वाले नहीं हैं। अगर उनके अनुसार कांग्रेस नहीं चली तो वह इस दिखावटी एकता का त्याग करने से पीछे नहीं हटेंगे।' (लिबरेटर)

महात्मा गाँधी, तिलक के पश्चात् स्वराज्य आन्दोलन के एकछत्र मुखिया रहे अतः उनकी कार्यशैली, विशेषकर हिन्दू-मुस्लिम-सहयोग के क्रम में विफल रहने पर भी मृत्युपर्यंत अटल बनी रही, उसके परिणामों से आज के नेता जिनके

बयानों को हमने प्रारम्भ में उद्धृत किया है वे सबक ले सकते हैं। पर ऐसा वे भी नहीं कर रहे। अतः ईश्वर पर सब छोड़ते हुए कुछ विद्वानों की सम्मति देना चाहेंगे।

अमेरिका के जाने-माने लेखक स्टैनले वोलपार्ट, जिनका लेखन विशेषकर नेहरू जी के बारे में विवादास्पद भी रहा है, का निम्न अवतरण पाठक अवश्य पढ़ें -

उन्होंने अपनी पुस्तक 'जिन्ना ऑफ पाकिस्तान' (1984) में लिखा है कि- ' खिलाफत के खात्मे पर पूरे भारत में जहाँ-तहाँ मुसलमानों ने हिन्दुओं पर गुस्सा उतारा। हत्या, दुष्कर्म, जबरन धर्मांतरण, अंग-भंग और क्रूर अत्याचार किए। पूरे खिलाफत आन्दोलन के दौर की परख करने पर आश्चर्य होता है कि गाँधी जी के अहिंसा सम्बन्धी दोहरेपन तथा खिलाफत आन्दोलन की किस बड़े पैमाने पर लीपा-पोती हुई है।' उस आन्दोलन के दुष्परिणामों से देश आज तक पूरी तरह नहीं उबर सका है। इसीलिए अपने-अपने कारणों से यहाँ सभी राजनीतिक धाराएँ उसकी चर्चा से बचती हैं। जबकि यह उस ऐतिहासिक आन्दोलन का शताब्दी वर्ष है।

पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति के महत्वपूर्ण आंकलन के साथ इस आलेख को हम समाप्त करेंगे। वे लिखते हैं -

'वस्तुतः मुस्लिम मानसिकता की वास्तविकता को, अपने आदर्शों के दायरे में बंधे महात्मा गाँधी या तो समझ न सके थे और या फिर हिन्दू-मुस्लिम एकता के संदर्भ में मुस्लिमों को राजी करने के लिए वे हिन्दुओं के प्रति अन्यायकारी बनने में कोई परहेज नहीं करते थे।' वे आगे लिखते हैं-

'उस युग में हिन्दू-मुसलमानों की एकता स्थापित करने के लिए स्वयं महात्मा जी या उनके निर्देश के अनुसार अनेक कांग्रेसी लोग जो यत्न करते थे उसकी एक विशेषता यह होती थी कि प्रत्येक उपद्रव में असली दोषी को दोषी ठहराने का प्रयत्न न करके दोनों पक्षों को बराबर रखने का यत्न किया जाता था। यदि गोवध का प्रश्न उठाया जाता तो मस्जिद के सामने बाजे की समस्या साथ नत्थी कर दी जाती थी। यदि मजहबी जोश भड़काने या जेहाद के प्रचार की शिकायत की जाती तो उत्तर मिलता था कि हिन्दू भी तो शुद्धि करते हैं। हिंसा किसकी ओर से आरम्भ हुई इस प्रश्न को गौण बनाकर प्रमुखता इस बात को दी जाती थी कि कुछ न कुछ तो दोनों ओर से हुआ है। नाराजगी के भय से मुसलमानों के उत्तरदायित्व को यथासम्भव हल्का करने का प्रयत्न किया जाता था। ऐसी विचार पद्धति से यह अवश्य सूचित होता है कि महात्मा जी और उनके साथी इतने उदार थे कि वे अपराध का बोझ सदा अपने पलड़े में डालने को तैयार रहते थे। परन्तु यह तो स्पष्ट ही है कि यह विचारशैली न्यायपूर्ण नहीं थी इसी कारण रोग का ठीक इलाज नहीं हो सका। रोग था धर्मान्धता का और इलाज हो रहा था नैतिक। दवा रोग की जड़ को नहीं छूती थी।'

क्या ऐसा नहीं लगता कि इन्द्र जी की उक्त टिप्पणी आज के परिवेश पर सटीक बैठती है। इसीलिए हमने लिखा है कि १०० वर्ष में कुछ नहीं बदला। जो मुस्लिम तुष्टीकरण १९२० में प्रारम्भ हुआ वह आज २०२० में भी राजनीतिक दलों द्वारा अपनाया जा रहा है। इतिहास से सीखना चाहें तो अवश्य सुधार हो सकता है पर स्पष्ट है इस अन्याय पूर्ण शैली से राष्ट्र-हित कदापि सम्भव नहीं है।

- अशोक आर्य
चलभाष- +919314235101, +918005808485

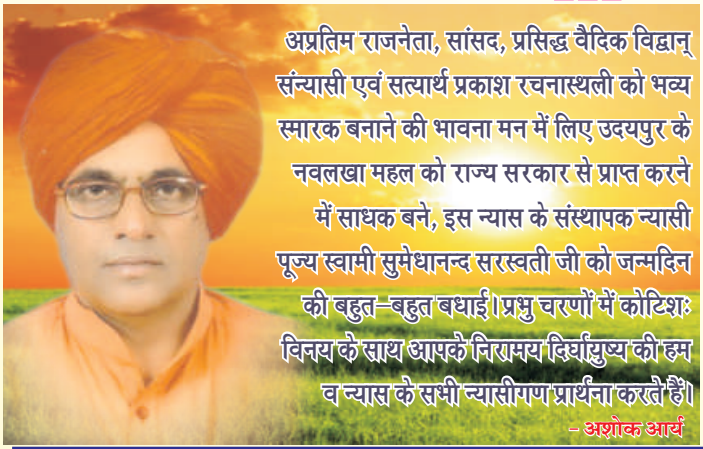

अप्रतिम राजनेता, सांसद, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् संन्यासी एवं सत्यार्थ प्रकाश रचनास्थली को भव्य स्मारक बनाने की भावना मन में लिए उदयपुर के नवलखा महल को राज्य सरकार से प्राप्त करने में साधक बने, इस न्यास के संस्थापक न्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी को जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई। प्रभु चरणों में कोटिशः विनय के साथ आपके निरामय दिर्घायुष्य की हम व न्यास के सभी न्यासीगण प्रार्थना करते हैं।

- अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश पहेली सूचना

डिजिटल अंकों के प्रिन्टिंग आदि परेशानी के कारण गत माह के अंक में दी गई पहेली को केवल एक सदस्य ने हल किया। अतः एक-दो माह जब तक (Printing Form) में पत्रिका आपको नहीं प्रेषित की जाती है तब तक सत्यार्थ प्रकाश पहेली स्थगित रहेगी।

- सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

७

(फरवरी–2024 तक प्रतिमाह एक लेख)

इस मध्य मूलजी ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली और शुद्ध चैतन्य के नाम से प्रतिष्ठित हुए। सच्चे योगियों की तलाश में अनेक ढोंगी बाबाओं से उनका साक्षात्कार हुआ। कोट कांगड़ा में ऐसे ही वैरागियों के एक दल से जिनके जाल में एक युवती रानी फँसी हुई थी, उनका साक्षात्कार हुआ। यह सब देखकर और उनको भोगविलास मात्र में फँसे देखकर मूलजी ने वह स्थान त्याग दिया और अपनी मनोरथ मुक्ता को प्राप्त करने के लिए सिद्धपुर के लिए प्रस्थान किया।

शुद्धि और आर्य समाज

गतांक से आगे ....

आर्यसमाज के विद्वानों ने जहाँ एक ओर शास्त्रार्थों के माध्यम से स्वधर्म के प्रति गर्व की अनुभूति कराते हुए विधर्मियों की समस्त पोल की ओर हिन्दू जनता का ध्यानाकर्षण करते हुए, उनके धर्मान्तरित होने के लिए बढ़ते हुए कदमों को रोका, वहीं शुद्धि के माध्यम से घर वापिसी के रास्ते खोल दिए। आर्यसमाज के नेताओं और सदस्यों ने अनेक कष्ट झेलकर भी शुद्धि का जो कार्य किया उसको विस्तार से तो किसी एक पुस्तक में भी समाहित नहीं किया जा सकता। हर प्रान्त ने इस कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस आलेख में हम केवल मालाबार और मीनाक्षीपुरम् की घटनाओं को अति संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे जो इस क्षेत्र में आर्यसमाज की सजगता और निरन्तर सक्रियता के प्रमाण हैं। आर्य समाज का शुद्धि अभियान स्वामी श्रद्धानन्द जी का व उनके कार्यों का वर्णन किये बिना अधूरा ही है अतः वह उल्लेख भी इस आलेख में आवश्यक है।

मालाबार में मतान्तरण– जब खिलाफत का आन्दोलन असफल हो गया और यह बात हिन्दुस्तान के मुस्लिमों को भलीभाँति अवगत हो गई तब उन्होंने अपनी खीज हिन्दुओं पर निकाली; क्यों? खिलाफत असफल होने में भारत के हिन्दुओं का क्या दोष था? क्या यह मोपलाओं के मन में बसे सहज द्वेष की अभिव्यक्ति नहीं थी? परन्तु इससे महात्मा गाँधी का हिन्दू मुस्लिम एकता का स्वप्न धराशायी हो गया। मालाबार के मोपलाओं ने जो अत्याचार वहाँ के हिन्दुओं पर किए, उसे पढ़कर भी आत्मा थर्रा जाती है। हजारों की संख्या में हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया। हजारों लोग बेघर हो गए।

ऐसे समय में आर्य समाज ने ही और विशेष रूप से पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने महात्मा हंसराज जी के नेतृत्व में मोर्चा संभाल लिया। आर्य समाजियों के सामने इस समय दो कार्य थे। पीड़ित हिन्दुओं की हर प्रकार से सहायता करना और दूसरा जिन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया उनके लिए घर वापसी के द्वार खोलना। हिन्दू और मुस्लिम प्रेस इन घटनाओं पर प्रायः मौन रही परन्तु जो खबरें मालाबार से प्राप्त हो रही थीं वे हृदय विदारक थीं। दंगों पर अपनी रिपोर्ट करते हुए मद्रास मेल ने लिखा–

In points of magnitude, organization and the atrocities committed by the rebels this rising in the Moplah country **is unparalleled in the history of Malabar, or for the matter of that in the history of the whole of India.** (Madras Mail, Nov 18, 21)

१६ अक्टूबर सन् १६२१ को पंजाब आर्यप्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में इस संदर्भ में सकारात्मक निर्णय लिया गया। आर्य समाज ने १ नवम्बर को पंडित ऋषिराम जी को मालाबार भेज दिया। पंडित जी ने कांग्रेस कमेटी में

स्वयंसेवक बनकर कार्य करना प्रारम्भ किया पर साथ ही साथ मुसलमान हुए हिन्दुओं को एकत्र करने का उद्योग भी वे करते रहे। पंडित जी ने रिलीफ के कार्य के अतिरिक्त जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को शुद्ध करने के लिए पेम्पलेट प्रकाशित किए। समाचार पत्रों में आन्दोलन किया और अनेक बिरादरियों की सभाओं में जाकर व्याख्यान दिए और मुखिया लोगों से मिलकर संगठन बनाने का यत्न किया। इन सबका यह परिणाम हुआ कि शुद्धि की

आवश्यकता की ओर वहाँ के लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ और वहाँ के राजाओं, रईसों और दूसरे पंडितों ने इस बात को मान लिया कि इस प्रकार से पतित हुए हिन्दू फिर से शुद्ध हो सकते हैं। आर्यसमाज ने फरवरी में आर्य गजट के सम्पादक श्रीमान् लाला खुशहालचन्द जी खुरसन्द (महात्मा आनन्द स्वामी जी) को भी मालाबार भेजा। इन सभी लोगों ने अपने प्राणों को हथेली पर रखकर विद्रोही इलाकों में दौरा किया और उनके उद्योग से बहुत बड़ी संख्या में जबरदस्ती मुसलमान बनाये हुए हिन्दू पुनः शुद्ध किए गए। अपनी रिपोर्ट देते हुए इन विद्वानों ने कहा था कि जितने हिन्दू जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये थे वे प्रायः शुद्ध हो चुके थे। अन्तिम रिपोर्ट यह है कि ३००० शुद्धियाँ की जा चुकी हैं इस प्रकार अंतिम विपदा के समय में आर्य समाज ने अपना कार्य बखूबी निभाया।

'आर्यसमाज के इतिहास भाग-२' से कतिपय शुद्धि आन्दोलनों का संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

राजपूत शुद्धि सभा

१९०९ में आगरा में पंडित भोजदत्त जी ने राजपूत शुद्धि सभा का गठन किया। 'मुसाफिर' नाम से एक पत्र भी निकाला गया। इस सभा ने निश्चय किया कि जिन लोगों को स्वधर्म में वापस लिया जाएगा इनकी जाति का निर्धारण गुण-कर्म के आधार पर किया जाएगा तथा सभी के साथ वे भोजन कर सकेंगे, ताकि उनको अपनत्व की अनुभूति हो सके। यद्यपि इस सभा का जीवन लगभग २ वर्ष का ही रहा परन्तु १०५२ नव-मुस्लिमों (मलकाना राजपूत) को इस मध्य शुद्ध किया गया।

३० अगस्त १९२२ को क्षत्रिय उपकारिणी सभा के अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत किया गया- 'शाही जमाने में जो राजपूत भाई हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति से अलग हो गए या अलग कर दिए गए थे और अब पुनः अपने धर्म तथा हिन्दू बिरादरी में आना चाहते हैं, उन्हें पुनः शुद्ध करके राजपूत बिरादरी में शामिल कर लिया जाय।' इस सभा के अध्यक्ष महाराजा सर रामपाल सिंह थे।

आर. के. घई. ने अपनी पुस्तक में इसके महत्त्व के बारे में लिखा है जो हम उद्धृत कर रहे हैं -

'Reclaiming these lost Kshatriyas considered as an event of great significance as this addition was considered as a part of the process of consolidation of the Hindus and moral victory of incalculable significance . (Shuddhi Movement in India- R K Ghai)'

इसके बाद दिसम्बर १९२२ को क्षत्रिय महासभा की कान्फरेन्स शाहपुराधीश महाराजा श्री नाहर सिंह जी के सभापतित्व में हुई, जिसमें नौमुसलिम राजपूतों को हिन्दू बिरादरी में शामिल करने की बात की पुष्टि की गई। यह प्रस्ताव अत्यन्त महत्त्व का था, क्योंकि पंडित भोजदत्त ने जिस राजपूत शुद्धि सभा की स्थापना की थी, वह १९१० तक ही कायम रह सकी थी। पर अपने जीवन की स्वल्प अवधि में ही उस द्वारा मैनपुरी, हरदोई तथा शाहजहाँपुर जिलों के हजार के ऊपर नौमुसलिमों को शुद्ध किया गया था। इस पर सभा के टूट जाने से शुद्ध हुए लोगों के हितों की रक्षा करने वाली तथा बिरादरी से उन्हें सम्मिलित करने के लिए प्रेरणा देने वाली कोई संस्था नहीं रह गई थी। क्षत्रिय उपकारिणी सभा के प्रस्ताव से उन्हें कुछ सहारा अवश्य प्राप्त हुआ, पर उसका एक उल्टा परिणाम भी हुआ। जब ये प्रस्ताव समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए तो मुसलिम क्षेत्रों में विक्षोभ उत्पन्न हो गया। मुसलिम मौलवी बड़ी संख्या में उन स्थानों पर जाने लगे, जहाँ नौमुसलिमों की बस्तियाँ थीं। उनका प्रयत्न था, कि ये लोग न केवल इस्लाम का परित्याग न करें, अपितु पूर्ण मुसलमान बन जायें। मुसलिम समाचार पत्रों में नौमुसलिमों को आर्यसमाज के आक्रमण से बचाने के लिए आन्दोलन शुरू हो गया। दिल्ली के ख्वाजा हसन निजामी ने इस अवसर

का लाभ उठाया और मुसलमानों को धर्म की रक्षा के लिए उकसाना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें इस्लाम के प्रचार के लिए नानाविध उपाय प्रतिपादित किए गए थे। यह पुस्तक स्वामी श्रद्धानन्द के हाथ लग गई और उन्होंने 'मुहम्मदी साजिश का इन्किशाफ' नाम की एक पुस्तिका उर्दू में प्रकाशित की, जिसमें हिन्दुओं को उन उपायों व हथकण्डों से सावधान किया, जो तबलीग के लिए प्रयुक्त किए जा रहे थे।

इसी प्रयोजन से १३ फरवरी १९२३ को विविध प्रदेशों से ८५ हिन्दू प्रतिनिधि आगरा में एकत्र हुए और उन्होंने 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' नाम से एक संगठन बनाने का निश्चय किया। सभा के प्रधान- स्वामी श्रद्धानन्द निश्चित हुए ।

ऐसी एक व्यवस्था लाहौर के प्राच्य महाविद्यालय में प्रधानाचार्य महामहोपाध्याय पंडित शिवदत्त शर्मा द्वारा की गई थी, जिसमें स्मृति ग्रन्थों तथा पुराणों से अनेक प्रमाण देकर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला था, कि जब किसी अनार्य में आर्य बनने की इच्छा उत्पन्न हो, तो सबसे पूर्व उसके मन में आर्यत्व के त्याग का पश्चाताप होना चाहिए, फिर म्लेच्छत्व के प्रति ममत्व को उसे छोड़ देना चाहिए। फिर श्रुति, स्मृति तथा पुराणों के कथन में विश्वास रखते हुए प्रायश्चित्त के लिए विद्वानों के पास आना चाहिए और फिर उनके उपदेशों को मानकर उपवास, गंगा स्नान आदि कर्म तथा शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित विधि के अनुसार राम, कृष्ण तथा शिव मंत्रों की दीक्षा लेनी चाहिए इस प्रकार अनार्यत्व दूर होकर आर्यत्व की प्राप्ति की जाती है। इस प्रकार पौराणिक लोग भी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के साथ शुद्धि के कार्य में सहयोग करने लग गये।

आठ वर्षों में जो कार्य किया उसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है- १८३३४२ नौमुसलिमों को शुद्ध कर हिन्दू समाज में सम्मिलित किया। २. साठ हजार के लगभग अछूतों को विधर्मी होने से बचाया। १२७ शुद्धि सम्मेलन किए गए। ८१ बड़े-बड़े सहभोज किए गए।

महाराष्ट्र के जगद्गुरु शंकराचार्य (डॉक्टर कुर्तकोटि) का समर्थन शुद्धि आन्दोलन को प्राप्त हुआ, और वहाँ के पौराणिक पंडितों ने शुद्धि के पक्ष में व्यवस्था प्रदान की।

उधर कांग्रेस की रीति-नीति से स्वामी जी का मोह भंग हो रहा था। मालाबार की घटनाओं के पश्चात् भी राष्ट्रीय क्षितिज पर मुस्लिम नेताओं के स्वर नहीं बदले जिससे स्वामी श्रद्धानन्द क्षुब्ध थे। सन् १९२५ में सार्वजनिक भाषण में मुस्लिम राष्ट्रवादी नेता डॉ. सैफुद्दीन किचलू ने जिस ढंग में

चेतावनी दी थी, उससे मुसलमानों की जेहादी भावना को आँका जा सकता है- 'मेरे प्यारे हिन्दू भाइयों, मेरी बात को ध्यान से सुनिएगा। यदि आप हमारे आन्दोलन की राह में रोड़े अटकाते हैं और हमें हमारे अधिकार नहीं देते तो हम अफगानिस्तान या किसी अन्य मुसलमान शक्ति के साथ मिलकर इस देश में अपना शासन स्थापित कर लेंगे।'

डॉ. अब्दुल्ला सुरहावर्दी जो आर. दास की स्वराज्य पार्टी के प्रमुख नेता और 'इंडियन सेन्ट्रल कमेटी' के सदस्य रह चुके हैं, इसकी प्रशंसा अपने प्रतिवेदन में इस प्रकार करते हैं-

'धर्मांतरण का क्रम जिसने भारत में मुस्लिम शासन की समाप्ति के बाद नव-शक्ति, स्फूर्ति और प्रेरणा अर्जित की, बेरोक-टोक निरन्तर चल रहा है। हर वर्ष इस्लाम में धर्मान्तरित लोग आते हैं। वे तथा उनसे पूर्व-धर्मान्तरितों के वंशज सर्वाधिक उत्साही अनुयायी और समर्थक हैं। वे हजारों की संख्या में मक्का पहुँचते हैं, जो इस्लाम का गढ़ और जन्मभूमि है, और वार्षिक 'हज' के अनुशासन की तप्त भट्टी में तपकर वे शुद्ध और पवित्र होकर भारत लौटते हैं। अरब के रीति-रिवाजों को ओढ़ने के बाद वे हिन्दुओं से उतने ही अलग-थलग दिख पड़ते हैं, जितने कि हिन्दू, चीनियों और यहूदियों से।' यह था मुस्लिम नेताओं का रुख जिसे समझना आवश्यक है और स्वामी श्रद्धानन्द जी की इस सब पर गहरी नजर थी। एक तरफ मुस्लिम नेताओं की यह स्थिति थी तो दूसरी और पौराणिक सनातनी नेता भी स्वामी जी से उनकी आर्यसमाजी पृष्ठभूमि के कारण संतुष्ट नहीं थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी देर तक हिन्दू महासभा में सम्मिलित नहीं रह सके। वह जिस ढंग से दलितोद्धार सदृश क्रान्तिकारी सुधार कार्यों के लिए आन्दोलन कर रहे थे, पुराने ढंग से कट्टर सनातनी हिन्दुओं को वह पसन्द नहीं था। उसमें उन्हें आर्यसमाज की बू आती थी। स्वामी जी के कार्यकलाप के सम्बन्ध में उनकी मनोवृत्ति जगद्गुरु शंकराचार्य भारतीय कृष्णतीर्थ के निम्नलिखित कथन से स्पष्ट हो जाती है-

'सनातन धर्म के नाम पर आर्य समाज का काम होता है। लोगों को शुद्ध करके यज्ञोपवीत देकर ब्राह्मण बनाया जाता

है। हमें धोखा देकर ऐसा काम किया जाता है।'

शीघ्र ही, स्वामी श्रद्धानन्द ने अनुभव कर लिया, कि महासभा

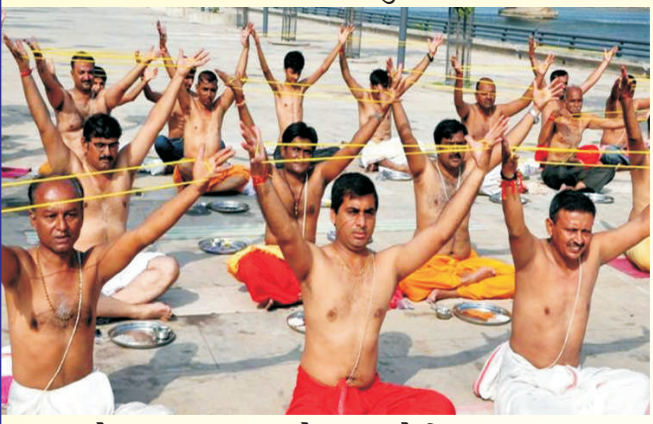

के साथ रहकर व उसके माध्यम से हिन्दू संगठन एवं समाज सुधार का कार्य नहीं कर सकते। उन्होंने यही उचित समझा कि हिन्दू महासभा से पृथक् होकर कार्य करें। त्यागपत्र देकर वह उससे पृथक् हो गए।

हिन्दू संगठन के जिस आन्दोलन को अब उन्होंने प्रारम्भ किया, उसके प्रयोजन को 'अर्जुन' के एक लेख में उन्होंने इस प्रकार प्रकट किया था- 'पाँच हजार वर्षों से दीन अवस्था को प्राप्त होते-होते गत एक हजार वर्षों में तो गिरते-गिरते यह देश दासता की पराकाष्ठा को पहुँच गया था। उस गुलाम की हालत बहुत दर्दनाक है, जो अपनी दासता को अनुभव करता हुआ भी गुलामी की जंजीरों में जकड़ा जा रहा हो। यह हालत आर्य हिन्दू समाज की मुसलमानों के शासनकाल में थी। परन्तु जो अभागा दास अपनी अवस्था में ऐसा सन्तुष्ट हो जाय कि उसी को जीवन का स्वाभाविक आदर्श समझने लग जाये, उसकी अवस्था को जाहिर करने के लिए कोई शब्द ढूंढ़े नही मिलते। ..... अंग्रेजों ने जहाँ भाई-भाई को लड़ाकर सारे देश पर काबू कर लिया, वहाँ कुछ काल के अनुभव से सन् १८५७ ईसवी के विप्लव के पीछे महारानी विक्टोरिया के घोषणापत्र के रूप में हिन्दियों को सोने की जंजीरें पहना दीं। साथ ही अपनी शिक्षाविधि द्वारा ऐसा क्लोरोफार्म सुंघाया कि गुलाम जंजीरों को आभूषण समझने लगे। फिर अपनी हालत में ऐसे मस्त हुए कि हिलने-डुलने की जरूरत ही नहीं समझी। हिन्दियों में से मुसलमानों ने तो फिर भी अपनी हस्ती कायम रखी। परन्तु हिन्दुओं ने अपने अस्तित्व को ही भुला दिया। पचपन वर्ष हुए कि बाल ब्रह्मचारी ने मूर्च्छित आर्य जाति को जगाने का यत्न किया। कुछ हलचल भी हुई, परन्तु मुट्ठीभर व्यक्तियों के सिवाय बाकी सब खर्राटे भरते रहे। उसी नशे में चूर हिन्दू समाज की आँखें जब महात्मा गाँधी ने खोलीं तो अपनी विवशता को भूलकर उन्होंने पहले स्वयं साधन सम्पन्न बनने के स्थान में अपने मुसलमान भाइयों की रहनुमाई का दावा कर दिया। स्वार्थ इस प्रतिज्ञा की जड़ में था। इसलिए महात्मा गाँधी के जेल जाते ही हिन्दुओं ने मुँह की खाई। परमात्मा के अटल नियम ने उनकी आँखें खोलीं, जिसका परिणाम गत सवा वर्ष का धर्मयुद्ध है। वह दिन दूर नहीं है जब आर्य हिन्दू समाज संघशक्ति से सुसज्जित होकर व्यक्ति और समष्टि दोनों को बलवान बनाकर सारे संसार के अन्य समाजों की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ायेगा।'

स्वामी जी ने यहाँ जिस धर्मयुद्ध का उल्लेख किया है, उससे हिन्दुओं का वह संघर्ष अभिप्रेत था, जो वे मलाबार, मुलतान, गुलबर्गा, अमेठी, सहारनपुर, कोहाट आदि के साम्प्रदायिक दंगों में मुसलमानों के अत्याचारों से आत्मरक्षा के लिए कर रहे थे।

संगठन द्वारा स्वामी जी हिन्दुओं को शक्तिशाली अवश्य बनाना चाहते थे, पर मुसलमानों या किसी भी अन्य धर्म के अनुयायियों का विरोध करना उनका उद्देश्य नहीं था। मुसलमानों को उनका यह कहना था- 'मुसलमान-समाज को मैं सिर्फ एक सलाह देना चाहता हूँ। याद रखो- संगठित और शक्ति सम्पन्न समाज का असंगठित और कमजोर समाज पर अत्याचार करना वैसा ही पाप है, जैसाकि कमजोर और कायर होना पाप है। इसलिए हिन्दुओं के संगठन और शक्ति सम्पन्न होने में विघ्न न डालो। यदि तुम हिन्दू समाज के अस्तित्व को इस भूमि पर से मिटा सकते, तो मैं कुछ भी नहीं कहता, क्योंकि मनुष्य समाज का यह दुर्भाग्य है कि इस वसुन्धरा का भोग वीर लोग ही कर सकते हैं। साथ ही तुमको यह भी मालूम होना चाहिए कि जो समाज पाँच हजार वर्ष के निरन्तर पतन के बाद भी नष्ट नहीं हुआ उसको भगवान ने किसी भावी हेतु से ही कायम रखा हुआ है। यदि हिन्दू समाज के अस्तित्व को नष्ट नहीं किया जा सकता तो उसको संगठित तथा दृढ़ होने दो, जिससे यह भारतीय राष्ट्र के राजनैतिक अभ्युदय में मुसलमानों के गले का भार न होकर शक्ति का पुंज साबित हो सके।

सत्य यह है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में आर्यसमाज शुद्धि का जो कार्य कर रहा था उसका आधार पूर्णतः बौद्धिक था। जोर-जबरदस्ती, लालच, दबाब का तो लेश भी नहीं था। उद्देश्य भी केवल मिटती जा रही हिन्दू जाति की रक्षा मात्र

था। पर अन्यों की तो बात भी क्या करें महात्मा गाँधी जी ने भी श्रद्धानन्द जी के कार्य का जो एकपक्षीय अनावश्यक मूल्यांकन किया उससे मुसलमानों को और बल मिला। हिन्दू-मुस्लिम एक्यभाव को लेकर गाँधी जी की जो सोच थी उसकी हवा मालाबार के दंगों और मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर किये क्रूरतम अत्याचारों ने निकाल दी परन्तु गाँधी जी की सोच और व्यवहार पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

१८ मई १९२४ को उन्होंने 'यंग इण्डिया' में एक लेख लिखा, जिसमें सम्प्रदायिक विद्वेषभाव के कारणों का विवेचन करते हुए आर्यसमाज को उसके लिए मुख्यरूप से उत्तरदायी ठहराया। सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि दयानन्द पर भी इस लेख में अनेक आक्षेप किए गए- 'मैंने आर्य समाजियों की बाइबल सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा है। .....मैंने इतने बड़े सुधारक का ऐसा निराशाजनक ग्रन्थ आज तक नहीं पढ़ा। स्वामी दयानन्द ने सत्य और केवल सत्य पर खड़े होने का दावा किया है, परन्तु उन्होंने अनजाने में जैन धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाइयत और स्वयं हिन्दू धर्म को अशुद्ध रूप में प्रकट किया है। उन्होंने पृथिवीतल पर अत्यन्त सहिष्णु और स्वतन्त्र सम्प्रदायों में से एक (हिन्दू सम्प्रदाय) को संकुचित बनाने का प्रयत्न किया है। ..... आप जहाँ कहीं भी आर्यसमाजियों को पायेंगे वहाँ जीवन और जागृति मिलेगी। परन्तु संकुचित विचार और लड़ाई-झगड़े की आदत से वे अन्य सम्प्रदायवालों से लड़ते रहते हैं, और जहाँ ऐसा नहीं, वहाँ स्वयं आपस में लड़ते रहते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी इसका अधिकांश भाग मिला हुआ है, परन्तु इन सब त्रुटियों के होते हुए भी मैं उन्हें ऐसा नहीं समझता जिसके लिए (सुधार की) प्रार्थना न की जा सके।

महात्मा गाँधी जी के इस लेख से मुसलमानों को बहुत बल मिला। जनता की गाँधी जी में अगाध श्रद्धा थी। सब कोई यह समझने लगे, कि देश में जो साम्प्रदायिक समस्या उत्पन्न हो गई है उसके लिए आर्यसमाज और उसके नेता तथा प्रधान उत्तरदायी हैं। आर्यसमाज की ओर से गाँधी जी द्वारा किए गए आक्षेपों के उत्तर में अनेक लेख लिखे गए और आर्य विद्वानों के एक डेपुटेशन ने उनसे भेंट की थी। इस पर महात्मा गाँधी ने आंशिक रूप से उस भ्रम के निराकरण का कुछ प्रयत्न भी किया, जो उनके लेख से उत्पन्न हो गया था। पर जो तीर छूट चुका था, उसे वापस ले सकना सम्भव नहीं था। स्वामी श्रद्धानन्द और आर्यसमाज द्वारा जो कार्य शुद्धि और हिन्दू संगठन के लिए किया जा रहा था, मुसलमान

उनके प्रति उग्र विरोधाभाव पहले रख रहे थे, अब गाँधी जी का आश्रय पाकर उसमें और अधिक वृद्धि हो गई।

और उसकी परिणति स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या से हुयी। घटना का तात्कालिक कारण असगरी बेगम की शुद्धि को समझा जाता है। असगरी बेगम नाम की एक मुसलिम महिला अपने दो बच्चों और भतीजे के साथ कराची से दिल्ली आयी थी, और वहाँ उसने हिन्दू धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की। शुद्धि संस्कार द्वारा उसे हिन्दू बना लिया गया और उसका नाम शान्तिदेवी रख दिया गया। तीन माह बाद उसके पिता मौलवी ताज मुहम्मद खां और पति सलीम उसे खोजते हुए दिल्ली आये और उसे पुनः मुसलमान बन जाने तथा करांची वापस जाने के लिए प्रेरित किया, पर वह तैयार नहीं हुई। इस पर उसके पति ने शान्ति देवी, स्वामी श्रद्धानन्द, डॉक्टर सुखदेव, पंडित इन्द्र, श्री देशबन्धु गुप्त, लाला लाजपत राय और करांची आर्यसमाज के मंत्री पर मुकदमा

दायर कर दिया। स्थानीय मुसलिम संगठनों ने इस मुकदमे को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया। ४ दिसम्बर सन् १९२६ को मुकदमे का फैसला सुनाया गया। जिसमें सब अभियुक्त बरी कर दि गए थे। पर इससे झगड़े का अन्त नहीं हुआ। खून करने की धमकियों के गुमनाम पत्र स्वामी जी के पास आने लगे, और इस सम्बन्ध में कुछ पेम्पलेट भी निकाले गए। ख्वाजा हसन निजामी के पत्र 'दरवेश' में कुछ इसी प्रकार के संकेत दिए गए थे। पर स्वामी जी ने इनकी कोई परवाह नहीं की और धमकी के पत्रों से पुलिस को सूचित तक नहीं किया। और तो और, यदि उनके निवास स्थान पर स्वयंसेवकों का पहरा लगाया जाता, तो उसे भी वह हटा देते थे।

सन् १९२६ का दिसम्बर का महीना था। स्वामी जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। उन्हें ब्रोंको निमोनिया हो गया था। डॉक्टर अन्सारी स्वामी जी के घनिष्ठ मित्रों में थे। उनके इलाज से उनकी दशा धीरे-धीरे सुधर रही थी, और सबको आशा थी कि वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे। पर ईश्वर को यह मंजूर नहीं था। २३ दिसम्बर को एक मुसलमान उनसे मिलने के लिए आया। उसने स्वामी जी से कहा- मैं आपसे इस्लाम के मुतल्लिक कुछ गुफ्तगू करना चाहता हूँ। पर वह इस्लाम के विषय में बात करने के लिए नहीं आया था। प्यास के बहाने उसने स्वामी जी से पीने के लिए पानी माँगा और जब सेवक पानी लेने के लिए गया तो उसने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर पिस्तौल दाग दी। क्षणभर में दो फायर हो गए। सेवक धर्मसिंह ने हत्यारे को पीछे से पकड़ा, इतने में उसने तीसरा फायर कर दिया। रोग शय्या पर पड़े हुए स्वामी श्रद्धानन्द तीन गोलियाँ अपने सीने में लिए हुए उसी मार्ग पर चल दिए जिस पर पंडित लेखराम जी गये थे।

स्वामी जी के शव का जुलूस दिल्ली से निकला उससे बड़े-बड़े सम्राटों को भी ईर्ष्या होती। नया बाजार से शुरू होकर खारी बावली और चाँदनी चौक होता हुआ जुलूस सीसगंज पहुँचा और वहाँ से यमुना के तट पर दो अढ़ाई मील तक सिर ही सिर दिखायी देते थे। जिसके लिए भी सम्भव था, स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दिल्ली आ गया। जुलूस में सम्मिलित नर-नारी जो गीत गा रहे थे, उसकी एक पंक्ति थी-

किया कत्ल है जिसने स्वामी हमारा,
उसे भी गले से लगाना पड़ेगा।

स्वामी जी जिस पवित्र भावना से शुद्धि और संगठन के आन्दोलन का संचालन कर रहे थे, वह इस गीत में परिलक्षित थी। स्वामी जी के कातिल का नाम अब्दुल रशीद था। कुछ दिन मुकदमा चलने के बाद उसे फांसी की सजा हुई। पर अब्दुल रशीद तो किन्हीं धर्मान्ध व्यक्तियों द्वारा उकसाया हुआ स्वामी जी की हत्या के लिए आया था। यह नहीं जानता था कि इस कृत्य से वह इस्लाम की चादर पर ऐसा धब्बा लगा रहा है जिसे कभी मिटाया नहीं जा सकेगा और जो स्वामी जी को सदा के लिए अमर कर जायेगा।

पर आश्चर्य तो गाँधी जी की प्रतिक्रया पर है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन घटनाओं के विश्लेषण से उनकी पूर्व निर्मित धारणाओं के परिवर्तित होने का डर उन्हें होता था वे उस पर सम्यक् विचार न करके लीपापोती का वक्तव्य देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते थे। खेद का विषय है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की क्रूर हत्या पर भी उन्होंने ऐसा ही किया। पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है कि- 'गाँधी जी ने बताया कि सच्चा धर्म क्या होता है और हत्या के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा'- ''अब शायद आप समझ गए होंगे कि किस कारण मैंने अब्दुल रशीद को भाई भी कहा है और मैं पुनः उसे भाई कहता हूँ। मैं तो उसे स्वामीजी की हत्या का दोषी भी नहीं मानता । वास्तव में दोषी तो वे हैं जिन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध घृणा फैलायी।''

धर्मांतरण की घटनाएँ आज बन्द हो गयीं हैं ऐसा कदापि नहीं है। हिन्दू समाज ऐसे ही असंगठित रहेगा तो यह प्रक्रिया रुकने वाली भी नहीं है। मेवात क्षेत्र में मुस्लिमों द्वारा धर्मांतरण के जो गंभीर प्रयास हो रहे हैं वे हिन्दू समाज को चेतावनी दे रहे हैं।

हम अन्त में यही लिखना चाहते हैं कि मतान्तरण का एक ही आधार जायज है वह है बौद्धिक। समाज में समरसता रहे इसके लिए हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सभी बन्धुओं को अपने विचार को प्रकट करने की तो स्वतंत्रता हो, जो बुद्धि-पूर्वक, विचारपूर्वक अपने लिए श्रेष्ठ समझें उसे ग्रहण करें परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी प्रयत्न वा प्रक्रिया प्रतिबन्धित रहे।

- अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

जीवन का अस्तित्व कर्म पर टिका है

जीवन का अस्तित्व कर्म पर टिका हुआ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। कर्म के बिना तो एक क्षण भी नहीं रहा जा सकता। संन्यासी भी कर्मों से विरत् नहीं हो जाता अपितु वह आसक्ति के घेरे को तोड़कर विश्व कल्याण की महती भावना से कार्य करता है। जगत्गुरु शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द जैसे मूर्धन्य संन्यासी जीवनपर्यन्त सत्कर्म करते रहे। किसी कन्दरा में बैठकर ब्रह्म चिन्तन नहीं करते रहे।

जीवनमुक्त भी लोक मंगल के लिए सत्कर्मों में निरन्तर लगे रहते हैं। उनका एक-एक क्षण श्रेष्ठ कर्मों में नियोजित रहता है। संसार को माया मानकर कर्म को त्याग बैठना एक प्रकार का पलायनवाद है जो विरक्ति नहीं, जड़ता का परिचायक है। ईश्वर प्राप्ति तो दूर इस भाव से साधना मार्ग पर एक पग बढ़ाना भी कठिन होगा।

परमात्मा अद्भुत शक्तियों का भण्डार है। उसके बिना इस अद्भुत कर्मचक्र का संचालक कौन हो सकता है? इन गतिशील अनेक लोकों का निर्माण भी तो प्रभु की अद्भुत कलाकारिता है। वह प्रभु कर्म की महती प्रेरणा देता है।

वेद कहता है- **'विष्णोः कर्माणि पश्यत।'** व्यापक भगवान के कर्मों को देखो।'

कुर्वन्नवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः।

कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीवन जीने की इच्छा करो। जब व्यक्ति कर्म क्षेत्र में आकर खड़ा होता है और आगे बढ़ता है उसके सामने अनेक कठिनाइयाँ आती हैं किन्तु आगे बढ़ने का संकल्प उसे हताश नहीं होने देता। यद्यपि व्याधि, अकर्मण्यता, संशय, प्रमाद, आलस्य, विषयों की कामना, दृष्टि की भ्रांति, लक्ष्य तक न पहुँच सकना आदि ऐसे विघ्न हैं जो कर्मयोगी के चित्त सागर में ज्वार भाटा लाये बिना नहीं रह सकते। कभी शारीरिक व्याधियाँ उसे भँवर में मगरमच्छ की भाँति ग्रसने को सन्नद्ध हो जाती हैं, कभी अकर्मण्यता की झंझावायु उसे आँख मूँदकर बैठ जाने के लिए विवश कर देती है। कभी संशय की परस्पर विरोधी तरंगें अपने थपेड़ों की मार से उसे आगे बढ़ने नहीं देतीं। कभी प्रयत्न करने पर भी किनारा न पाकर वह हताश होकर बैठ जाता है। विघ्नों के इस विप्लवकारी आन्दोलन में भी वेद कहता है- **'सानो सानुमारूहत्'** इतने वेग से चलो कि कर्म के शिखर पर पहुँच जाओ। विघ्न बाधाओं का सिर तभी तक ऊँचा रहता है जब तक कि वेग से मार्ग पर बढ़ने वाला मनुष्य उसके सिर पर पैर नहीं रख देता। इसके लिए आवश्यक है, एक लक्ष्य और एक चाल। इसी का नाम है एक शिखर से दूसरे शिखर पर चढ़ना।

यज्ञीय कर्म करें। यज्ञीय कर्म करने वाले अधिकारी की दृष्टि कर्म तक ही सीमित रहती है। कर्मफल तक पहुँचने का उसे अवसर ही नहीं देती। इसी को कहते हैं योग- **'कर्मसु कौशलम्'** यदि कर्मण्य फल में ही उलझा रहा तो लोभ उसे आगे नहीं बढ़ने देगा। तृष्णा कर्म के क्षेत्र में जाल जैसी है। लोभ तृष्णा का पिता है। इस जाल से बचने के लिए कर्मफल दृष्टि से बचना होगा। जो दृढ़ संकल्प से कर्मक्षेत्र में आ खड़ा होता है, आगे बढ़ता है। आगे का मार्ग स्वयं ही मिलता जाता है। **'तदिन्द्रो अर्थ चेतति'** उस विषय का ऐश्वर्यशाली प्रभु बोध कराता है। स्थिर मन से आगे बढ़ने का प्रयत्न करने पर

जहाँ मार्ग न मिलेगा अवश्य ही परमात्मा उसका बोध करायेगा। हमारे अपने अन्तःकरण में विद्यमान प्रभु का सन्देश हमें अवश्य मिलता रहेगा और कर्म के विशाल पर्वत को हम अवश्य पार कर जायेंगे।

कर्मों का स्रोत इन्द्रियाँ हैं। मन आन्तरिक कर्मों की और ज्ञान तथा कर्मेन्द्रियाँ बाह्य कर्मों की जनक हैं। इन्द्रियाँ वेग से दौड़ने वाली हैं। इनके विपरीत प्रवाह को बदलने के लिए इन्द्रियों को तपाने की आवश्यकता है। प्रत्येक प्रकार का कष्ट सहते हुए ध्येय के लिए आगे बढ़ना तप है।

कर्म के मार्ग में लोग जगत् मिथ्या की धारणा से बाधा उत्पन्न करते हैं। जगत् मिथ्या है यह धारणा व्यक्ति एवं समाज के लिये अहितकर है। इस विश्वास के आधार पर कर्मों से विरत् होकर ब्रह्म की अनुभूति भी असम्भव है। शरीर अपने पोषण एवं विकास के लिए साधन इस संसार से ही प्राप्त करता है। अतः जगत् की महती उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। हर व्यक्ति के जीवन निर्वाह के लिए न्यूनतम साधन तो चाहिए ही।

ईश्वर भी सृष्टि संचालन के गुरुतर कार्य में निरन्तर लगा रहता है। सम्पूर्ण सृष्टि रचना उसकी कलाकारिता है। उसकी कलाकारिता का सौन्दर्य प्रकृति में झाँकता है। वह हर वस्तु में विद्यमान है। इसी संसार में रहते और कर्म करते हुए परमात्मा का दर्शन कर सकना सम्भव है। निष्काम भाव से किया कर्म न तो आत्मा को बांधता है न उसे मलीन करता है। कर्म का वास्तविक क्षेत्र जीवन मुक्ति का माध्यम यह संसार है तो उसे मिथ्या मानकर कर्म छोड़ देना अविवेकपूर्ण है। अतः कर्म में निरन्तर लगे रहने से ही जीवन सार्थक होगा। हम सब लक्ष्य निर्धारित करें और उसे पाने के लिए निरन्तर कर्म करते हुए आगे बढ़ें।

साभार- हितोपदेशक

कचरा भी है काम का

कांच से बालू बनाने के उपक्रम 'ग्लास टु सैण्ड' के संस्थापक उदित एक सोशल एंटरप्रेन्योर होने के साथ ही आर्टिस्ट एवं गोल्फ खिलाड़ी भी हैं। वे विश्व के सामने आने वाले पर्यावरणीय संकट का समाधान निकालने के साथ ही युवाओं को पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के तहत निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास भी कर रहे हैं। भारत में कचरा प्रबन्धन आज भी एक बड़ी चुनौती है। उस पर से अगर कचरे में कांच भी मिला हुआ हो, तो उस कांच का अपघटन लाखों वर्ष तक नहीं होता और वह लोगों के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है। इसका क्या समाधान हो सकता है?

२०१८ में १६ वर्षीय उदित के मन में भी यह सवाल बार-बार उठ रहा था। उन्होंने अपने घर में भी देखा था कि किस तरह कांच या शीशे की बोतलें इकट्ठा होती थीं। फिर कबाड़ी वाला उन्हें लेकर जाता था और वे यूँ ही किसी डंपिंग ग्राउंड में डंप कर दी जाती थीं। वे बताते हैं, 'मुझे उत्सुकता हुई। मैंने रिसर्च किया, तो पता चला कि नए नियम-कानूनों के तहत दिल्ली में कांच की रीसाइक्लिंग कितनी मुश्किल हो गई है। रीसाइक्लिंग करने वाले लोगों की कमी से लेकर बोतलों को रखने की जगह का संकट है। ट्रांसपोर्टेशन का खर्च होता है, सो अलग। इस कारण कबाड़ी वाले कांच के कचरे को यूँ ही लैंडफिल्स में डाल आते हैं। इसके बाद ही मैंने एक ऐसा मॉड्युलर इकोसिस्टम डेवलप करने का फैसला लिया, जिसमें कांच की बेकार बोतलों से बालू का निर्माण किया जा सके। जो इंडस्ट्री के लिए उपयोगी भी हो।'

उदित बताते हैं कि उन्हें न्यूजीलैंड की एक कम्पनी की जानकारी मिली, जहाँ ऐसी मशीन बनती है, जो कांच की बोतल को पीसकर बालू बना देती है। उन्होंने न्यूजीलैंड सरकार से सम्पर्क किया, जिसके पश्चात् भारत में न्यूजीलैंड की उच्चायुक्त ने मशीन आयात करने के लिए उन्हें अनुदान दिया और शुरू हो गया कांच से बालू बनाने का सिलसिला। बीते डेढ़ सालों में करीब आठ हजार कांच की बोतलों को क्रश कर बालू बनाया गया है। आज ६५ से अधिक वॉलंटियर्स, १० के करीब संस्थान (जहाँ कांच का कचरा निकलता है) एवं कुछेक विदेशी उच्चायोग (न्यूजीलैंड, हंगरी) कार्य कर रहे हैं। कांच से जो सिलिका युक्त बालू तैयार होता है, उसे कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री में भेज दिया जाता है। वहाँ इससे ईंट व कंक्रीट तैयार किए जाते हैं। इसके अलावा, दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिरों एवं ऐतिहासिक इमारतों के संरक्षण (हेरिटेज कंजर्वेशन) में इनका उपयोग किया जाता है। वे कहते हैं, 'सभी को मालूम है कि नदियों से कैसे बालू का उत्खन्न होता है, जिससे रिवर बेड खोखला हो रहा है। उस बालू की जगह इनका इस्तेमाल बढ़ने से हमारी नदियाँ भी सुरक्षित रह सकेंगी। इसके साथ ही गोल्फ बंकर्स के निर्माण में भी इस बालू का प्रयोग किया जा सकता है। इस पर फिलहाल परीक्षण चल रहा है।'

दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित ब्रिटिश स्कूल से १२वीं करने वाले उदित लंदन यूनिवर्सिटी के फ्रेशमैन हैं। कोविड के कारण वे लंदन नहीं जा सके। लेकिन उन्हें उम्मीद है कि वे जल्द ही कैंपस ज्वाइन कर सकेंगे। उदित का कहना है कि वे नहीं चाहते कि जो समस्या प्लास्टिक वेस्ट के कारण उत्पन्न हुई है, वही कांच के साथ भी हो। इसलिए उन्होंने युवाओं से अपील की है कि वे इस दिशा में अपना ज्यादा से ज्यादा योगदान करें। सामूहिक रूप से अपनी आवाज उठाएँ। जब पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, तभी हम सभी खुशहाल होंगे।

आज हमारी पाँच माताओं की हो रही दुर्दशा

हमारे हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) में पाँच माताओं का विशेष महत्व है। वे हैं-

१. जन्म देने वाली माता
२. गऊ माता
३. भारत माता
४. वेद माता
५. गंगा माता।

आज इन पाँचों माताओं की दुर्दशा, अवहेलना व अनदेखी हो रही है जिससे देश पतन की ओर अग्रसर है। इनकी दशा सुधारने से ही देश उन्नत व समृद्धिशाली बन सकेगा। इनका संक्षिप्त वर्णन इस भाँति है-

१. जन्म देने वाली माता- आज नौजवान बच्चे शादी होने के बाद, जहाँ माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। इसकी बजाय वे अपने माता-पिता को वृद्ध-आश्रम में भर्ती कर देते हैं और उनकी सेवा, सद् उपदेशों व अनुभवों से वंचित हो जाते हैं। यदि कोई परिवार माता-पिता को घर में रखते भी हैं तो वे उनकी सेवा करना तो दूर रहा उनकी तरफ कोई ध्यान भी नहीं देते हैं। यह बात सभी परिवारों में तो नहीं है, परन्तु अधिकतर घरों में वृद्ध माता-पिता की अनदेखी की जा रही है इसलिए आज जन्म देने वाली माताओं की स्थिति दयनीय है।

२. गऊ माता - हमारे हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) में गऊ माता का बहुत बड़ा महत्व है, कारण इसके रोम-रोम में परोपकार की भावना व्याप्त है। इसका दूध, घी, दही, छाछ सभी चीजें मनुष्य के लिए लाभकारी हैं। इसकी एक यह विशेषता है कि इसका मूत्र और गोबर कभी भी दुर्गन्ध नहीं मारता और इसके मूत्र व गोबर से उत्तम खाद बनता है, जिसको खेत में डालने से उत्तम अन्न पैदा होता है और पौष्टिक होता है जिसके खाने से शरीर स्वस्थ रहता है। साथ ही जमीन की उत्पादन शक्ति भी बढ़ती है। जबकि रसायन खाद से धीरे-धीरे कम होती जाती है। इसलिए गऊ के मूत्र तथा गोबर से बनी हुई खाद उत्तम कहलाती है। गाय के मरने के बाद उसकी खाल व हड्डी भी काम आती है। इसके बछड़े भी हल जोतने के काम आते हैं। ऐसी गौ माता भी दूध बन्द होने के बाद कसाईयों को काटने के लिए बेच दी जाती है या गली-कूचों में मल खाती हुई घूम रही होती है। आज कल देशी नस्ल की गऊयें कम होती जा रही हैं और विदेशी नस्ल की गऊयें बढ़ती जा रही हैं कारण विदेशी गऊओं से दूध अधिक होता है इसलिए देशी गऊयें अधिकतर कटने चली जाती हैं जबकि देशी नस्ल की गाय का दूध कम जरूर होता है परन्तु पौष्टिक व लाभदायक अधिक होता है। परन्तु दुःख है कि किसान पैसे के लोभ में उसको कसाईयों के हाथ बेच देता है और वे काट दी जाती हैं। इस प्रकार भारत में गऊओं की बड़ी दुर्दशा है। गो-हत्या बन्द होने से ही यह समस्या हल होगी।

३. भारत माता - भारत माता की हालत इस समय बहुत ही खराब है। यहाँ पाकिस्तान और बंगलादेश से आतंकवादी आते हैं और हर दिन निर्दोष हिन्दुओं की हत्या कर देते हैं। भारत में भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, तरफदारी, लूट-खसोट बहुत हो रही है। देश में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड बहुत अधिक बढ़ा हुआ है जिससे लोगों का जीवन बहुत ही

अधिक दुःखमय बना हुआ है, इसलिए देश में वैदिक ज्ञान की आवश्यकता है जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड समाप्त हो सकता है। इसके लिए यहाँ गाँव-गाँव में गुरुकुल खोलने की आवश्यकता है, जिनमें बच्चें व बच्चियाँ पढ़कर वैदिक धर्मी बनकर इस अन्धविश्वास के वातावरण को दूर कर सकते हैं। जब तक वैदिक धर्म नहीं चलेगा तब तक यह मूर्ति-पूजा, श्राद्ध-तर्पण, भूत-प्रेत, कण्ठी-डोरी आदि अन्धविश्वास ऐसे ही चलते रहेंगे और देश पतन की ओर बढ़ता रहेगा जिससे देश की दुर्दशा ऐसी ही रहेगी।

४. वेद माता - सृष्टि की आदि से लेकर महाभारत तक पूरे विश्व में वैदिक धर्म ही था। महाभारत के विश्व युद्ध में विश्व के अधिकतर वीर, योद्धा, वैदिक विद्वान् आचार्य आदि के समाप्त हो जाने से कम पढ़े-लिखे स्वार्थी ब्राह्मणों के हाथों में वेद प्रचार का कार्य करना आ गया। उन्होंने अपने स्वार्थवश वेदों के मंत्रों के गलत अर्थ लगाकर, यज्ञों में पशुबलि, मूर्तिपूजा, श्राद्ध-तर्पण आदि करना आरम्भ कर दिया तथा अनेकों मत-मतान्तर चला दिये जिससे केवल भारत से ही नहीं बल्कि विश्व से वैदिक धर्म प्रायः लुप्त हो गया और अज्ञान, अंधविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया। फिर ईश्वर की अपार कृपा से सन् १८२५ में देव दयानन्द का जन्म टंकारा (गुजरात) में हुआ। उन्होंने प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् स्वामी विरजानन्द जी से वेदों का स्वाध्याय करके, देश में पुनः वेदों का प्रचार किया। जितना वेद-प्रचार होना चाहिए था उतना न होने से अभी तक वेदमाता की दुर्दशा ही है। वेद-प्रचार अधिक होने से यह समस्या हल हो सकती है।

५. गंगा माता- हिन्दू धर्म में गंगा माता को बड़ा पवित्र माना गया है। इसकी यह विशेषता है कि इसका जल चाहें कितने ही दिन तक रखो परन्तु उसमें कीड़े नहीं पड़ेंगे। यह कोई चमत्कार नहीं इसका कारण केवल यही है कि यह पहाड़ों में जहाँ जड़ी-बूटियाँ अधिक हैं, वहीं से होकर आती है जिससे इसके पानी में यह विशेषता हो जाती है। अन्य नदियों में नहीं। हिन्दू धर्म में यह मान्यता बन गई है कि गंगा नदी में स्नान करने से मनुष्य के पाप घट जाते हैं। यह एक गलत धारणा है जिससे हिन्दू जाति में पाप बढ़ गया है। महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार से यह भ्रम प्रायः समाप्त हो गया है। परन्तु इस समय इसकी जो दुर्दशा हो रही है, उसका कारण यह भी है कि जहाँ-जहाँ से यह गुजरती है उसके किनारे के शहरों का गन्दा पानी इसमें गिरता रहता है और गंगा के पवित्र जल को गन्दा बना देता है। कहीं-कहीं तो गंगा का जल इतना गन्दा हो जाता है, उसमें स्नान करने का मन भी नहीं करता। इस प्रकार इस समय गंगा माता की भी दुर्दशा हो रही है।

वर्तमान सत्ता-परिवर्तन से आशा है देश से भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, लूट-खसोट सब बन्द कर दी जायेगी। गो माता की हत्या बन्द कर दी जायेगी, गंगा में गन्दा पानी गिरना बन्द कर दिया जायेगा। देश में वेदों का प्रचार अधिक होना आरम्भ हो जायेगा, जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड भी समाप्त हो जायेगा और माता-पिता का प्रत्येक घर में सम्मान होना आरम्भ हो जायेगा, जिससे उम्मीद है कि इन पाँचों माताओं का सम्मान होने लगेगा जिससे देश उन्नति करता हुआ, साथ ही समृद्धशाली होता हुआ पुनः 'विश्व गुरु' तथा सोने की चिड़िया' हो सकेगा।

गोविन्दराम एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड, दोतल्ला,
कोलकत्ता- ७००००७

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य	भंवरलाल गर्ग	डॉ.अमृत लाल तापड़िया
मंत्री-न्यास	कार्यालय मंत्री	उपमंत्री-न्यास

मुंशी प्रेमचन्द और आर्यसमाज

गतांक से आगे .....

प्रेमचन्द का सबसे तीव्र प्रहार अपनी लेखनी द्वारा अगर किसी क्षेत्र में सबसे अधिक हुआ। तो वह जातिवाद के विरुद्ध था। उन्होंने जन्मना जातिवाद की कड़ी आलोचना की थी। नीच कहलाने वाली जातियों के सामाजिक उत्थान के लिए उनके हृदय में एक विशेष तड़प थी। जातिवाद और छुआछूत का आह्वान स्वामी दयानन्द ने किया था जिसे आर्यसमाज के शीर्ष नेताओं जैसे स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, लाला गंगाराम, संत राम बी.ए ने न केवल आगे बढ़ाया बल्कि रोपड़ के पंडित सोमनाथ की माँ, जम्मू के महाशय रामचन्द्र, इन्दौर के वीर मेघराज जाट ने अपना बलिदान तक दे दिया दिया। प्रेमचन्द इसी कड़ी में स्वामी दयानन्द के एक प्रबल संदेशवाहक बनकर जातिवाद के विरुद्ध अपनी लेखनी थामते दिखे।

जहाँ एक ओर प्रेमचन्द हंस पत्रिका के मुख पृष्ठ पर १९३३ में डॉ. अम्बेडकर का चित्र यह कहकर छापते हैं कि- 'आपने सतत् उद्योग से अनेक परीक्षाएँ पास करके विद्वता प्राप्त की

है और यह प्रमाणित कर दिया है कि अछूत कहलाने वाली जातियों को किन्हीं असाधारण उपकरणों से ईश्वर ने नहीं बनाया। इस समय आप विश्वविख्यात व्यक्तियों में हैं।' वहीं दूसरी ओर आप अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' में एक ऊँचे परिवार में जन्मे युवक अमरकान्त का वृतान्त लिखते हैं, जो नीची जाति की बस्ती में जाकर रहने लगता है। उन्हें स्वच्छता का सन्देश और शिक्षा देता है। उन्हें शराब और मुर्दा मांस खाने से विमुख करने का प्रयास करता है। अन्त में उसकी विजय होती है। कर्मभूमि पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रेमचन्द किसी सवर्ण परिवार में जन्मे आर्यसमाजी प्रचारक के जीवन वृतान्त को अपनी कलम से उद्धृत कर रहे हों।

मन्दिरों में चमारों के प्रवेश न कर पाने पर प्रेमचन्द एक ऐसा कटाक्ष लिखते हैं जो पढ़ने वालों की आत्मा को अन्दर तक झकझोर देता है। प्रेमचन्द लिखते हैं कि चमारों के हाथ के बने जूते पहनकर कोई भी मन्दिर जा सकता है। मानो जूते पवित्र चीज थे मगर उसे बनाने वाले चमार अपवित्र थे। शान्तिकुमार नामक युवक अछूतों के मन्दिर प्रवेश के लिए आन्दोलन करता है। लाठियाँ, गोलियाँ चलती हैं। अन्त में चमारों को मन्दिर प्रवेश का अधिकार प्राप्त होता है। एक बड़ा भारी समारोह होता है। आर्यसमाज ने अनेक बार दलितों के मन्दिर में प्रवेश के लिए आन्दोलन किये। यह दृष्टान्त यथार्थ में किसी घटना का साक्षात् वर्णन प्रतीत होता है। मन्दिर के महन्तों की अनैतिक हरकतों को लिखकर उन्हें अपराधी सिद्ध करने में भी प्रेमचन्द पीछे नहीं रहते।

मठाधीशों को जुआ खेलने वाला, ईमान बेचने वाला, झूठी गवाहियाँ देने वाला, भीख माँगने वाला और जिनके स्पर्श तक से देवता कलंकित हो, ऐसे 'धर्म के पाखण्डी' ठेकेदार, प्रेमचन्द लिखते हैं। पाठक समझें कि प्रेमचन्द के हृदय में अछूत कहलाने वाले लोगों से उनका धार्मिक अधिकार छीने जाने पर कितनी पीड़ा होगी। कभी प्रेमचन्द अछूतों का 'मन्दिर प्रवेश' करवाते हैं। कभी प्रेमचन्द अछूतों और सवर्णों को एक साथ बैठकर सहभोज करने का वर्णन दर्शाते हैं। 'मन्दिर' नामक कहानी में प्रेमचन्द एक चमारिन विधवा पर मन्दिर में प्रवेश न करने देने वाले पुजारी को निर्दयी धर्म के ठेकेदार लिखते हैं। यह लेख चाँद पत्रिका के अछूत अंक विशेष में प्रकाशित हुआ था। ठाकुर का कुआँ, दूध का दाम, सद्गति, जीवन में घृणा का स्थान-साहित्य में घृणा का स्थान, कफन प्रेमचन्द की कुछ कृतियाँ हैं। जिनमें उन्होंने समाज के सबसे अधिक दबे, कुचले हुए पात्रों पर हो रहे अत्याचारों का मार्मिक चित्रण किया है। उनके उद्धार की कामना का सन्देश दिया है। उस काल में यह सन्देश एक आर्यसमाजी हृदय के व्यक्ति की कामना के अतिरिक्त और हो भी क्या सकता था।

अपनी मृत्यु से कुछ महीने पहले मुंशी प्रेमचन्द अप्रैल १९३६ में लाहौर आर्य समाज की जुबली के अवसर पर आर्य भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष के नाते प्रसंग वशात् आर्यसमाज की सराहना करते हुये कहते हैं- 'आर्यसमाज ने इस सम्मलेन का नाम आर्यभाषा सम्मलेन शायद इसलिए रखा है कि यह समाज के अन्तर्गत उन भाषाओं का सम्मलेन है जिनमें आर्यसमाज ने धर्म का प्रचार किया है और उनमें उर्दू और हिन्दी दोनों का दर्जा बराबर है। मैं तो आर्य समाज को जितनी धार्मिक संस्था मानता हूँ उतनी ही तहजीबी (सांस्कृतिक) संस्था भी समझता हूँ। बल्कि आप क्षमा करें तो मैं कहूँगा कि उसके तहजीबी कारनामे उसके धार्मिक कारनामों से भी प्रसिद्ध और रोशन हैं। आर्यसमाज ने साबित कर दिया है कि समाज की सेवा ही किसी धर्म के सजीव होने के लक्षण हैं। कौमी जिन्दगी की समस्याओं को हल करने में उसने जिस दूरंदेशी का सबूत दिया है उस पर गर्व कर सकते हैं। हरिजनों के उद्धार में सबसे पहले आर्य समाज ने कदम उठाया। लड़कियों की शिक्षा की जरूरत को सबसे पहले उसने समझा। वर्ण-व्यवस्था को जन्मगत न मानकर कर्मगत सिद्ध करने का सेहरा उसके सर पर है। जातिगत भेद-भाव और खान-पान में छूत-छात और चौके-चूल्हे की बाधाओं को मिटाने का गौरव उसी को प्राप्त है। यह ठीक है कि ब्रह्मसमाज ने इस दिशा में पहले कदम रखा पर वह थोड़े से अंग्रेजी पढ़े-लिखों तक ही रह गया। इन विचारों को जनता तक पहुँचाने का बीड़ा आर्यसमाज ने ही उठाया। अन्धविश्वास और धर्म के नाम पर किए जानेवाले हजारों अनाचारों की कब्र उसने खोदी, हालाँकि मुर्दे को उसमें दफन न कर सका। और अभी तक उसका जहरीला दुर्गन्ध उड़-उड़कर समाज को दूषित कर रहा है। समाज के मानसिक और बौद्धिक धरातल (सतह) को आर्यसमाज ने जितना उठाया है, शायद ही भारत की किसी संस्था ने उठाया हो। उसके उपदेशकों ने वेदों और वेदांगों के गहन विषय को जन-साधारण की सम्पत्ति बना दिया, जिन पर विद्वानों और आचार्यों के कई-कई लिवर वाले ताले लगे हुये थे। आज आर्यसमाज के उत्सवों और गुरुकुलों के जलसों में हजारों मामूली लियाकत के स्त्री-पुरुष सिर्फ विद्वानों के भाषण सुनने का आनन्द उठाने के लिए खिंचे चले जाते हैं।

गुरुकुलाश्रम को नया नाम देकर आर्यसमाज ने शिक्षा को सम्पूर्ण बनाने का महान् उद्योग किया है। सम्पूर्ण से मेरा आशय उस शिक्षा का जो सर्वांगपूर्ण हो, जिसमें मन, बुद्धि, चरित्र और देह, सभी के विकास का अवसर मिले। शिक्षा का

वर्तमान आदर्श यही है। मेरे ख्याल में वह चिरसत्य है। वह शिक्षा जो सिर्फ अक्ल तक ही रह जाये, अधूरी है। जिन संस्थाओं में युवकों में समाज से पृथक् रहनेवाली मनोवृत्ति पैदा हो, जहाँ पुरुषार्थ इतना कोमल बना दिया जाए कि उसमें मुश्किलों का सामना करने की शक्ति न रह जाए, जहाँ कला और संयम में कोई मेल न हो, जहाँ की कला केवल नाचने-गाने और नकल करने में ही जाहिर हो, उस शिक्षा का मैं कायल नहीं हूँ। शायद ही मुल्क में कोई ऐसी शिक्षण संस्था हो जिसने कौम की पुकार का इतना जवांमर्दी से स्वागत किया हो। अगर विद्या हममें सेवा और त्याग का भाव न लाए, अगर विद्या हमें आदर्श के लिए सीना खोलकर खड़ा होना न सिखाए, अगर विद्या हममें स्वाभिमान पैदा न करे, और हमें समाज के जीवन प्रवाह से अलग रखे तो उस विद्या से हमारी अविद्या अच्छी। और आर्यसमाज ने हमारी भाषा के साथ जो उपकार किया है कि स्वामी दयानन्द ने इसी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश लिखा और उस वक्त लिखा जब उसकी इतनी चर्चा न थी। उनकी बारीक नजर ने देख लिया कि अगर जनता में प्रकाश ले जाना है तो उसके लिए हिन्दी भाषा ही अकेला साधन है, और गुरुकुलों ने हिन्दी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाकर अपने भाषा प्रेम को और भी सिद्ध किया है।'

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'शुद्धि समाचार' का जनवरी-फरवरी १९३२ का संयुक्तांक श्रद्धानन्द बलिदान अंक के रूप में प्रकाशित हुआ था, जिसमें प्रेमचन्द का लेख 'स्वामी श्रद्धानन्द और भारतीय शिक्षा प्रणाली' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इस लेख में प्रेमचन्द ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को स्वामी श्रद्धानन्द जी की देन पर विस्तार से प्रकाश डाला है। प्रकारान्तर से इस लेख को भी स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी में बिताए गए तीन दिनों से प्रभावित स्वीकार किया जा सकता है। इस लेख से भी प्रेमचन्द की आर्य समाजी विचारधारा ही प्रमाणित होती है।

गुरुकुल कांगड़ी की साहित्य परिषद् के जुलाई १९२७ में हुए वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता प्रेमचन्द ने की थी और इस उत्सव में वहाँ निरन्तर तीन दिन तक प्रवास करके गुरुकुल कांगड़ी से पर्याप्त परिचय प्राप्त किया था। प्रेमचन्द ने वहाँ के तीन दिनों के अनुभव लिपिबद्ध करके 'गुरुकुल कांगड़ी में तीन दिन' शीर्षक लेख के रूप में लखनऊ की मासिक पत्रिका 'माधुरी' के अप्रैल १९२८ के अंक में प्रकाशित करा दिए थे। प्रेमचन्द के इस लेख का उर्दू अनुवाद उर्दू पत्रकारिता के युगपुरुष महाशय कृष्णजी के सम्पादन में लाहौर से प्रकाशित होने वाले उर्दू साप्ताहिक 'प्रकाश' के २२ अप्रैल १९२८ के अंक में भी प्रकाशित हो चुका है। गुरुकुल कांगड़ी के अनुभवों पर प्रेमचन्द ने एक पूरक लेख लिखकर चार वर्ष उपरान्त पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के सम्पादन में कलकत्ता से प्रकाशित मासिक पत्र 'विशाल भारत' के अगस्त १९३२ के अंक में 'पद्मसिंह शर्मा के साथ तीन दिन' शीर्षक से प्रकाशित कराया था, जो प्रेमचन्द के मानस पर आर्य समाज की स्थायी छाप का ज्वलन्त प्रमाण है।

मुंशी जी स्वयं आर्यसमाज के सदस्य थे और दलित उद्धारक एवं हिन्दी भाषा के समर्थक थे। प्रेमचन्द जी के आर्यसमाज के अनेक विद्वानों से सम्बन्ध थे जैसे पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय जी उनके सहपाठी थे, महेश प्रसाद जी उनके मित्र थे, कहानीकार सुदर्शन जी भी उनके अभिन्न मित्र थे, इन्द्र विद्यावाचस्पति जी के साथ सम्बन्ध थे, आचार्य रामदेव जी के अपार स्वाध्याय के आप प्रशंसक थे। पंडित पद्म सिंह शर्मा और चन्द्रमणि विद्यालंकार से आपके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। मुंशी प्रेमचन्द जी अपने जीवन की अन्तिम वेला तक आर्य समाजी पत्रों में लिखते रहे। उनके लेखों में ईश्वर के सर्वव्यापक स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। उन्होंने इस आर्य सिद्धान्त पर डटकर लिखा है। सबको अपनाना, किसी को अस्पृश्य न मानना, आर्य धर्म के बन्द द्वार सबके लिए खोलना, दीनों की रक्षा, धेनु की रक्षा, प्राणिमात्र से प्यार, प्रेमचन्द जी ने इन सब विषयों पर लिखा है और आर्य समाज का गुणगान किया है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मुंशी प्रेमचन्द जी अपने जीवन में महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की विचारधारा से जुड़े रहे। उनकी सफलता का एक प्रमुख कारण उनका आर्य विचारधारा को अपनाना था। इसके माध्यम से उन्होंने आर्य विचारधारा का भूरिशः प्रचार-प्रसार किया। वह आर्य समाज के गौरव थे।

मुंशी प्रेमचन्द और आर्यसमाज के सम्बन्धों पर यह एक संक्षिप्त सा लेख है। इस विषय पर शोध की अधिक आवश्यकता है।

अनुज आर्य (साभार -सोशल मीडिया)

क्या भारत 1915 में भी आजाद हो सकता था?

कल्पना कीजिए कि आप एक घने जंगल से गुजर रहे हों और एक बाघ आपके सामने आ जाय तो आप क्या करेंगे? कहें हम कुछ भी पर सत्य तो यह है कि अधिकांश का डर के मारे ही दम निकल जाएगा। परन्तु १६ वर्षीय जतीन्द्रनाथ मुखर्जी के सामने जब ये क्षण आया तो वे बाघ पर टूट पड़े। और एक रोंगटे खड़े कर देने वाले संघर्ष में उन्होंने बाघ को मार गिराया। इनका इलाज करने वाला अंग्रेज डॉक्टर इनके घावों व धैर्य को देखकर चकित था। इस घटना के बाद इनको 'बाघा जतिन' भी कहा जाने लगा। जब ऐसे साहसी, अनुपम जीवट वाले व्यक्तित्व के मन-मस्तिष्क में देश-प्रेम की लहरें हिलोरे लेने लगें और व्यक्ति मातृभूमि को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने का संकल्प ले ले तो युगान्तर पार्टी को नया बल मिलना तय था और ऐसा हुआ भी।

हम लोग प्रायः पढ़ते-सुनते हैं-

दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल,
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।।

भारत की स्वतंत्रता में महात्मा गाँधी के अवदान को किसी भी प्रकार से कम करके नहीं नापा जा सकता है। स्वतंत्रता के भाव को व्यापक जन-आधार प्रदान करने में उनका निःसन्देह अतुल्य योगदान था। परन्तु उन सहस्रों बलिदानियों, जिन्होंने भारत माता की स्वतंत्रता के लिए भरी जवानी में मृत्यु का फंदा चूम लिया, को भुला देना भी कृतघ्नता की पराकाष्ठा है। जहाँ तक बाघा जतिन का प्रश्न है, कुछ विद्वानों का तो यहाँ तक मानना है कि दुर्भाग्य से बाघा जतिन की योजना, साथी की गद्दारी के कारण असफल हो गयी अन्यथा भारत १९१५ में ही स्वतन्त्र हो गया होता और जतिन को राष्ट्रपिता माना जाता क्योंकि गाँधी जी का तो तब तक भारतीय राजनीति में पदार्पण ही नहीं हुआ था।

बाघा जतिन का जन्म ७ दिसम्बर, १८७९ को कुष्टिया जिले के काया गाँव में हुआ जो अब बंगला देश में है। इनकी अल्पायु में ही इनके पिता का देहान्त हो गया था। पिता की मौत के बाद माँ शरतशशि ने ही अपने मायके में उनकी परवरिश की, शुरू से ही उनकी रुचि फिजिकल गेम्स में रही, स्विमिंग और हॉर्सराइडिंग के चलते वो बलिष्ठ शरीर के स्वामी बन गए। जतिन की असली ताकत उनकी निडरता ही नहीं उनका वैचारिक दर्शन भी था। स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्र नाथ टेगौर, आदि के सम्पर्क ने उनकी सोच को परिपक्वता प्रदान की। वे स्वतंत्र भारत को हर प्रकार के शोषण से रहित देखना चाहते थे। अंग्रेजों को खदेड़ने के लिए वे एक नेशनल आर्मी बनाना चाहते थे। यह संभवतः पहला विचार था जो किसी भारतीय क्रान्तिकारी के मन में उदय हुआ, जिसे बाद में रास बिहारी बोस और सुभाष बाबू ने ठोस धरातल प्रदान किया।

अन्याय, वह किसी के भी द्वारा किया हो उन्हें कतई सह्य नहीं था इसी कारण अनेक अवसरों पर उन्होंने अंग्रेज सिपाहियों

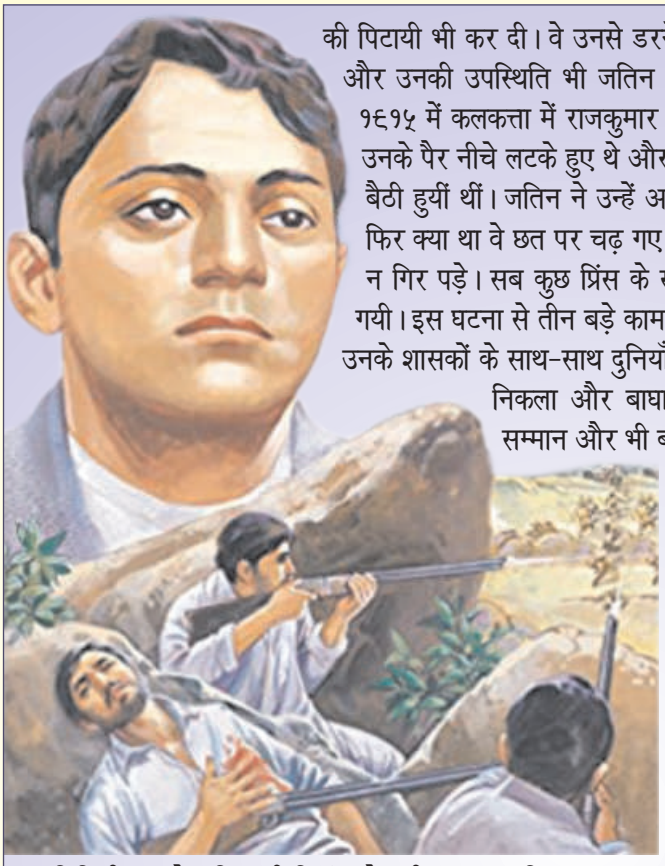

की पिटायी भी कर दी। वे उनसे डरने लगे थे। और तो और, प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा और उनकी उपस्थिति भी जतिन की निडरता को चुनौती नहीं दे सकी। हुआ यूँ कि १९१५ में कलकत्ता में राजकुमार की शाही यात्रा में एक मोटर पर कुछ अंग्रेज बैठे थे, उनके पैर नीचे लटके हुए थे और उनके बूट खिड़कियों से लग रहे थे जिसमें महिलायें बैठी हुयीं थीं। जतिन ने उन्हें अपने पैर ऊपर रखने को कहा पर वे नहीं माने। बस फिर क्या था वे छत पर चढ़ गए और उनको तब तक पीटते रहे जब तक कि वे नीचे न गिर पड़े। सब कुछ प्रिंस के समक्ष हुआ था। पर गलती उन अंग्रेजों की ही मानी गयी। इस घटना से तीन बड़े काम हुए। अंग्रेजों के भारतीयों के प्रति व्यवहार के बारे में उनके शासकों के साथ-साथ दुनियाँ को भी पता चला, भारतीयों के मन से उनका खौफ निकला और बाघा जतिन के नाम के प्रति क्रान्तिकारियों के मन में सम्मान और भी बढ़ गया।

क्रान्तिकारी दल 'अनुशीलन समिति' के निर्माण व संचालन में बाघा जतिन का बड़ा हाथ था। उन्होंने इसकी शाखाओं का उड़ीसा तक विस्तार किया। बाद में आपका सम्पर्क वारीन्द्र घोष से हुआ। इन्होंने उनके साथ बम बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। सामाजिक सेवा में भी जतिन आगे रहते थे। अंग्रजों का मानना यह था कि जतिन इसके बहाने नए क्रान्तिकारियों की भरती करते थे।

जब ये दार्जिलिंग में अनुशीलन समिति का कार्य कर रहे थे तो एक दिन सिलीगुड़ी स्टेशन पर अंग्रेजों के एक मिलिट्री ग्रुप से जतिन की भिडंत हो गयी। इनका मुखिया कप्तान मर्फी था। इन्होंने जतिन से दुर्व्यवहार किया। इतने पर भी मिलिट्री के डर से चुप रह जाय वो बाघा जतिन तो नहीं हो सकता, यह एक बार फिर सिद्ध हो गया। इन्होंने आठों की जमकर पिटायी की। अंग्रेजी पत्रों में उन आठों अंग्रेजों का मजाक बनाया गया जो एक भारतीय से पिट गए। मजिस्ट्रेट ने इन्हें दोषमुक्त करते हुए पूछा कि तुम एक साथ कितनों को पीट सकते हो? जतिन ने जबाब दिया कि 'ईमानदार हो तो एक भी नहीं और बेईमान हों तो कोई गिनती नहीं।'

वायसराय लॉर्ड मिन्टो ने उस वक्त कहा था, 'A spirit hitherto unknown to India has come into existence. a spirit of anarchy and lawlessness which seeks to subvert not only British rule but the Governments of Indian chiefs. इसी स्प्रिट को बाद में इतिहासकारों ने 'जतिन स्प्रिट' का नाम दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय जब गाँधी जी प्रयत्न कर रहे थे कि अंग्रेजों की सेना में अधिक से अधिक भारतीय सम्मिलित हों तो दूसरी ओर क्रान्तिकारी योजना बना रहे थे कि इस अवसर पर अंग्रेजों की दासता का जुआ उतार फेंका जाय। गदर पार्टी सहित अनेक क्रान्तिकारियों ने जर्मनी को अपनी योजना से जोड़ा। भारत में युगान्तर पार्टी के कर्त्ता-धर्त्ता होने के कारण यह जिम्मेदारी जतिन को मिली। हथियार जर्मनी से आने थे। पर इसके लिए क्रान्तिकारियों के पास धन नहीं था सो डकैतियों के माध्यम से धन जुटाने की योजना बनायी गयी।

बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, सिंगापुर जैसे कई ठिकानों में १८५७ जैसे सिपाही विद्रोह की योजना बनाई गई। फरवरी १९१५ की अलग-अलग तारीखें तय की गईं, पंजाब में २१ फरवरी को २३वीं कैवलरी के सैनिकों ने अपने ऑफीसर्स को मार डाला। लेकिन उसी रेंजीमेन्ट में एक विद्रोही सैनिक के भाई कृपाल सिंह ने गद्दारी कर दी और विद्रोह की सारी योजना सरकार तक पहुँचा दी। सारी मेहनत एक गद्दार के चलते मिट्टी में मिल गई। सिंगापुर में सफलता मिली पर वह एक सप्ताह तक ही चल पायी।

पर इस सबसे जतिन के होंसले पस्त नहीं हुए। हावड़ा में पंजाब मेल को लूटने की योजना भी मुखबिरी के कारण असफल

हो गयी। जतिन भूमिगत हो गए पर कार्यशील रहे। जर्मनी से हथियारों से भरा जहाज चल पड़ा था। उसकी डिलीवरी उड़ीसा के बालासोर तट पर होनी थी। पर एक चेक जासूस इमेनुअल विक्टर, जो डबल एजेंट का कार्य कर रहा था उसने अमेरिका को खबर दे दी। वहाँ से अंग्रेजों को खबर लग गयी। पूरा समुद्र तट सील कर दिया गया। भारी मात्रा में जर्मन हथियार बरामद कर लिया गया। क्रान्ति फेल हो चुकी थी। सपना मिट्टी में मिल चुका था।

चेक के ही रॉस हेडविक ने बाद में लिखा कि 'इस प्लान में अगर इमेनुअल विक्टर वोस्का ना घुसता तो किसी ने भारत में गाँधी का नाम तक ना सुना होता और राष्ट्रपिता बाघा जतिन को कहा जाता।'

१ सितम्बर, १९१५ को पुलिस ने जतीन्द्र नाथ का गुप्त अड्डा 'काली पोक्ष' (कप्तिपोद) ढूँढ़ निकाला। गोलीबारी के मध्य यतीन्द्र नाथ की गोली से पुलिस अफसर राज महन्ती वहीं ढ़ेर हो गया। यह समाचार बालासोर के जिला मजिस्ट्रेट किल्वी तक पहुँचा दिया गया। किल्वी दल बल सहित वहाँ आ पहुँचा। चित्तप्रिय नामक क्रान्तिकारी जतिन के साथ था। दोनों तरफ से गोलियाँ चली। चित्तप्रिय वहीं शहीद हो गया।

वीरेन्द्र तथा मनोरंजन नामक अन्य क्रान्तिकारी मोर्चा सम्भाले हुए थे। इसी बीच यतीन्द्र नाथ का शरीर गोलियों से छलनी हो चुका था। जब किल्वी ने गोलीबारी बन्द की तो गिरफ्तारी देते वक्त जतीन्द्र नाथ ने किल्वी से कहा- 'गोली मैं और चित्तप्रिय ही चला रहे थे। बाकी के तीनों साथी बिल्कुल निर्दोष हैं।' १० सितम्बर, १९१५ को भारत की आजादी के इस महान् सिपाही ने अस्पताल में सदा के लिए आँखें मूँद लीं। भारत के नौनिहालों को प्रेरणा देने के लिए उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया, इसीलिए वे सदैव कहते थे- आमार मोरबो जगत जागवे (We shall die to awaken the nation)

वरिष्ठ पुलिस अफसर टेगार्ट ने कहा था कि यदि यह योजना सफल हो जाती, और हथियार जतिन तक पहुँच जाते और भारतीय सेना खड़ी कर ली जाती तो ब्रिटिश हार तय थी। उसने एक बार अपने साथियों से कहा था- "If Bagha Jatin was an Englishman, then the English people would have built his statue next to Nelson's at Trafalgar Square."

प्रस्तुति- अशोक आर्य
सम्पादक 'सत्यार्थ सौरभ', नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर

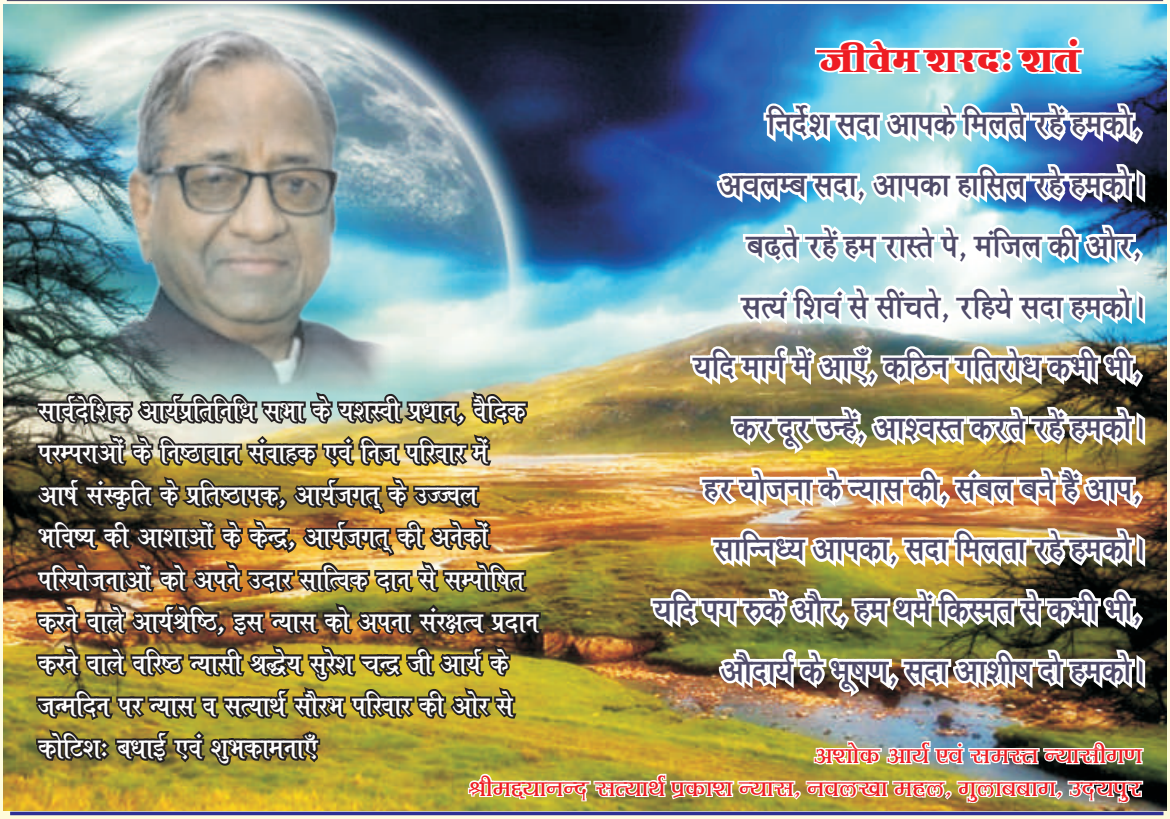

समाचार

गुजरात की बेटी खुशी ने किया कमाल, मात्र 17 वर्ष की उम्र में बनी UNEP की ग्रीन एंबेसडर

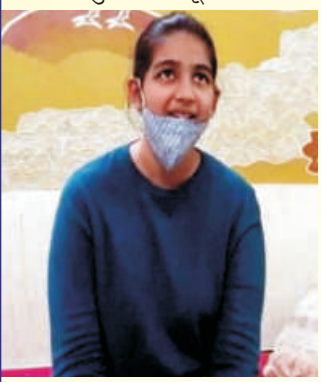

गुजरात के सूरत की रहने वाली खुशी चिंदलिया ने मात्र १७ वर्ष की उम्र में बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। संयुक्त राष्ट्र ने खुशी को भारत के लिए यूएनईपी की क्षेत्रीय राजदूत नियुक्त किया है। पर्यावरण के प्रति प्यार और लगाव के चलते इतनी कम उम्र में ही खुशी को यह बड़ी सफलता हासिल हुई है।

खुशी से जब इस सफलता के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि मैं यह उपलब्धि पाकर बहुत खुश हूँ। उन्होंने कहा कि मैंने जब अपने होमटाउन के चारों ओर फैली हरियाली को सूखा पड़ते देखा तो मुझे बहुत दुख हुआ और इसके बाद से ही मैंने प्रकृति को हरा भरा और सुरक्षित रखने के लिए विभिन्न तरह के उपाय खोजने शुरू कर किए थे।

उन्होंने आगे कहा कि जब मैं और मेरा परिवार शहर में नए घर में शिफ्ट हुए, तो मुझे चारों तरफ हरियाली दिखाई देती थी और मुझे बेहद आकर्षित करती थी। मेरे घर के पास चीकू के कई पेड़ थे जहाँ कई पक्षियों का बसेरा था। हमारा घर पूरी तरह प्रकृति की हरियाली से घिरा था। लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई तो मैंने हरियाली को ठोस जंगलों में बदलते देखा।

इसके बाद मुझे महसूस हुआ कि मेरी छोटी बहन इस सुन्दरता का बिल्कुल आनन्द नहीं ले पाएगी जैसा मैंने बचपन में लिया था और यहीं से मैं प्रकृति के प्रति बहुत ज्यादा जागरुक हो गई थी। खुशी ने आगे कहा कि मैंने अपने आसपास के पर्यावरण की रक्षा करने के तरीकों की तलाश करना शुरू कर दिया।

भारत के लिए 'ग्रीन एम्बेसडर' नियुक्त होने के बाद अब खुशी को पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में जागरूकता फैलाने और पर्यावरण संरक्षण में भारत के योगदान पर चर्चा करने का अवसर मिलेगा। वह दुनिया भर के अन्य राजदूतों के साथ पर्यावरण की सुरक्षा जैसे प्रमुख विषयों पर चर्चा करेंगी। वह खुद भी संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम-तुंजा इको जेनरेशन के लिए सम्बोधन भी दिया करेंगी।

'किसानों पर घटिया राजनीति'

किसानों के बारे में लाए गए विधेयकों पर राज्यसभा में जिस तरह का हंगामा हुआ है, क्या इससे हमारी संसद की इज्जत बढ़ी है? दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश भारत है। पड़ौसी देशों के सांसद हमसे क्या सीखेंगे? विपक्षी सांसदों ने इन विधेयकों पर सार्थक बहस चलाने के बजाय राज्यसभा के उप-सभापति हरिवंश पर सीधा हमला बोल दिया। उनका माइक तोड़ दिया। नियम-पुस्तिका फाड़ दी। धक्का-मुक्की की। सदन में अफरा-तफरी मचा दी। उच्च सदन को निम्न कोटि का बाजार बना दिया। यही विधेयक लोकसभा में भी पारित हुआ है लेकिन वहाँ तो ऐसा हुड़दंग नहीं हुआ। जिसे वरिष्ठ नेताओं का उच्च सदन कहा जाता है, उसके आठ सदस्यों को निलंबित करना पड़ जाए तो उसे आप सदन कहेंगे या अखाड़ा? विपक्षी नेता आरोप लगा रहे हैं कि उपसभापति ने ध्वनिमत से इन किसान-कानूनों को पारित करके 'लोकतंत्र की हत्या' कर दी है और सत्तारुढ़ दल के नेता इसे विपक्षियों की 'शुद्ध गुंडागर्दी' बता रहे हैं। यह ठीक है कि ध्वनि मत से प्रायः वे ही विधेयक पारित किए जाते हैं, जिन पर लगभग सर्वसम्मति-सी होती है। यदि एक भी सांसद किसी विधेयक पर बाकायदा मतदान की मांग करे तो पीठासीन अध्यक्ष को मजबूरन मतदान करवाना पड़ता है। इस संसदीय नियम का पालन नहीं हो पाया, क्योंकि विपक्षी सांसदों ने इतना जबर्दस्त हंगामा मचाया कि सदन में अराजकता फैल गई। विपक्ष का सोच है कि यदि बाकायदा मतदान होता तो ये विधेयक कानून नहीं बन पाते। विपक्ष को पिछले ६ साल में यही मुद्दा हाथ लगा है, जिसके दम पर देश में गलतफहमी फैलाकर कोई आन्दोलन खड़ा कर सकता है। प्रधानमंत्री और कृषि मंत्री ने साफ-साफ कहा है कि उपज के न्यूनतम समर्थन मूल्यों, मंडियों और आड़तियों की व्यवस्था ज्यों की त्यों रहेगी लेकिन अब किसानों के लिए खुले बाजार के नए विकल्प भी खोले जा रहे हैं ताकि उनकी आमदनी बढ़े। इस नए प्रयोग के लागू होने के पहले ही उसे बदनाम करने की कोशिश को घटिया राजनीति नहीं कहें तो क्या कहेंगे? सरकार ने छह रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्यों में ५० से ३०० रु. प्रति क्विंटल की वृद्धि कर दी है। प्रसिद्ध किसान नेता स्व. शरद जोशी के लाखों अनुयायियों ने इस कानून के पक्ष में आन्दोलन छेड़ दिया है। मेरी राय में ये दोनों आन्दोलन इस समय अनावश्यक हैं। जरा सोचें कि कोई राजनीतिक दल देश के ५० करोड़ किसानों को लुटवाकर अपने पाँव पर क्या कुल्हाड़ी मारना चाहेगा?

– डॉ. वेदप्रताप वैदिक

Congratulations

Shri Satish Chandra, son in law of Bhai Pradeep Arya (Ex- Chairman, U.I.T. Alwar, the face of Aryasamaj, engaged in so many humanitarian activities to uplift and propagate the aims of Aryasamaj in Alwar region) who is working as Senior Vice President and Head product management and customer experience, Orix Auto Infrastructure Services Ltd., has been recognized as one of top 100 Great People Managers by Forbs India & Great Manager Institute.

We heartily congratulate Shri Pradeep Arya and family , on behalf of the trust for this really great achievement of their son in law.

हलचल

हिन्दी के टुकड़े-टुकड़े गैंग से हिन्दी की रक्षा।

हिन्दी को अंग-भंग करने की साजिश को हमें सफल नहीं होने देना है। हिन्दी अपनी उपभाषाओं एवं बोलियों के साथ स्वस्थ है। जिन सांसदों को सही से हिन्दी बोलनी नहीं आती, वे भोजपुरी का एक वाक्य रोमन में लिखकर इसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की वकालत कर रहे हैं। इससे हिन्दी भाषियों की संख्या घटेगी, उसकी सहभाषाओं, उपभाषाओं और बोलियों के मध्य मैत्री भी आहत होगी।

हम सबको इस विषय पर अपने अपने स्तर से आवाज उठानी है। अपने जनप्रतिनिधियों को प्रत्यावेदन देकर विधान सभाओं और संसद तक आवाज पहुँचानी है।

जय हिंदी! जय देवनागरी!! जय भारतीय भाषायें!!!

- डॉ. शंकर लाल शर्मा, सेवानिवृत्त हिन्दी विभागाध्यक्ष
सम्बद्ध महाविद्यालय (रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली)
एवं पूर्व कार्यकारणी सदस्य, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, लखनऊ

शोक संवेदना

अत्यन्त दुखद समाचार

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ.रामनाथ जी वेदालंकार के सुपुत्र श्री विनोदचन्द्र जी विद्यालंकार के अचानक देहावसान का दुखद समाचार प्राप्त हुआ है। वे सुयोग्य पिता के सुयोग्य पुत्र थे। आचार्य रामनाथ जी के स्वर्गस्थ होने के बाद भाई विनोद जी कुल परम्परा के अनुसार वैदिक साहित्य साधना में लगे हुये थे। उन्होंने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया व अनेकों का संपादन किया ।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

नहीं रहे भजनोपदेशक कमलदेव आर्य

हा! शोक महाशोक। महान् दुःख का विषय है कि महाराम गढ़ी, जनपद-मथुरा निवासी आर्य भजनोपदेशक पण्डित कमलदेव आर्य का प्रथम आश्विन शुक्ला पंचमी विक्रमी सम्वत् २०७७ तदनुसार दि. २१ सितम्बर २०२० को निधन हो गया है। कार्यक्रमों में उनके व्याख्यान, महत्त्वपूर्ण अवसरों पर तर्कयुक्ति प्रमाणसमन्वित उनके भजन व उपदेश बहुत सारगर्भित होते थे, क्योंकि उनकी वाणी सत्यान्वेषी श्रद्धालुओं की झोलियों को सिद्धान्त रूपी मणियों व मोतियों से भरती रहती थी। आदरणीय आर्य जी सरल स्वभाव, मिलनसार व साधु प्रकृति के धनी अजातशत्रु व्यक्ति थे। उनका वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से चमकता हुआ जीवन आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द सरस्वती को समर्पित रहा। आज हमने महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज का एक विशिष्ट सैनिक खो दिया है। कितना दुःखद अवसर आ उपस्थित हुआ है। 'गता हि नो ते दिवसाः।' परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को उत्तम नवजीवन रूप सद्गति व शोकसन्तप्त परिवार व बन्धु-बान्धवों को इस विकट विपत् में धैर्य प्रदान करे।

- अशोक आर्य

वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का ८१ वर्ष की आयु में यकृत सम्बन्धी लम्बी बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। स्वामी जी युवावस्था में ही आर्यसमाज से जुड़ गए थे। उनका विचार था कि आर्यसमाज को प्रत्यक्ष राजनीति में भाग लेना चाहिए। उन्होंने आर्यसभा का गठन किया। बाद का इतिहास राजनीतिक दलदल का है। वे हरियाणा सरकार में शिक्षा मन्त्री भी रहे। मंदिरों में दलितों के प्रवेश को लेकर नाथद्वारा मंदिर तक की, तथा सती प्रथा के विरोध में देवराला तक की पदयात्राएँ विशेष रूप से राजस्थान में चर्चित रहीं। उन्होंने बंधुआ मजदूरों के हक में काम किया। वे उत्कृष्ट वक्ता थे। जिसके चलते उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति का संस्पर्श किया।

उत्कृष्ट समाजसेवी संन्यासी को अपनी ओर से और न्यास की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

- अशोक आर्य

महेश सोनी को भातृ शोक

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि बीकानेर नगर आर्य समाज के वर्तमान प्रधान श्री महेश सोनी जी के पूज्य बड़े भाई और नगर आर्य समाज, बीकानेर के पूर्व प्रधान श्री रामेश्वर लाल जी आर्य का ८५ वर्ष की आयु में दिनांक १४ सितम्बर २०२० को निधन हो गया। श्री रामेश्वर लाल जी बचपन से ही आर्य समाज के स्तम्भ रहे अपने पिताश्री के साथ आने लगे तथा सक्रिय कार्यकर्त्ता रहते हुए प्रधान के पद को सुशोभित किया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवारीजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें।

- भवानीदास आर्य

जीवात्मा

जीव के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य (संक्षेप में)

१. ईश्वर एक है जबकि जीव अनेक हैं।

२. ईश्वर व जीव सत् व चेतन हैं पर वे भिन्न-भिन्न हैं। भिन्नता दो प्रकार की होती है। एक दूरी की तथा दूसरे स्वरूप की। दूरी के संदर्भ में ईश्वर-जीव कदापि भिन्न नहीं हो सकते परन्तु स्वरूप भिन्नता के अनुसार कभी एक नहीं हैं, सदैव भिन्न थे, भिन्न हैं और भिन्न रहेंगे। अर्थात् जैसी कुछ मतवादियों की धारणा है कि जीव ही उन्नति करते करते परमेश्वर बन जाता है, मिथ्या है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

'अर्थात् जैसे पृथिव्यादि द्रव्य आकाश से भिन्न कभी नहीं रहते, क्योंकि अन्वय अर्थात् अवकाश के बिना मूर्त्तद्रव्य कभी नहीं रह सकता और व्यतिरेक अर्थात् स्वरूप से भिन्न होने से पृथक्ता है। वैसे ब्रह्म के व्यापक होने से जीव और पृथिवी आदि द्रव्य उससे अलग नहीं रहते और स्वरूप से एक भी नहीं होते। जैसे घर के बनाने से पूर्व भिन्न-भिन्न देश में मट्टी, लकड़ी और लोहा आदि पदार्थ आकाश में ही रहते हैं। जब घर बन गया तब भी आकाश में हैं और जब वह नष्ट हो गया अर्थात् उस घर के सब अवयव भिन्न-भिन्न देश में प्राप्त हो गये, तब भी आकाश में हैं, अर्थात् तीन काल में आकाश से भिन्न नहीं हो सकते और स्वरूप से भिन्न होने से न कभी एक थे, न हैं, न होंगे। इसी प्रकार जीव तथा सब संसार के पदार्थ परमेश्वर में व्याप्त होने से परमात्मा से तीनों कालों में भिन्न और स्वरूप भिन्न होने से एक कभी नहीं होते। (सप्तम समुल्लास)'

जीव के लक्षण-

मनुष्यों को यह जानना चाहिए कि जो अन्त:करण, प्राण, इन्द्रिय और शरीर का प्रेरक, इन सबको धारण करने वाला तथा इनका स्वामी है और इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दु:ख तथा ज्ञान आदि गुणों वाला है, वह इस शरीर में जीव है।

- ऋग्वेद १/५८/८ के महर्षि दयानन्द कृत भाष्य से।

३. जीव शरीर में परिच्छिन्न (एकदेशी) हैं, विभु नहीं।

४. जीव सूक्ष्म ईश्वर सूक्ष्मतर है।

५. जीव और ईश्वर में व्याप्य-व्यापक संबंध है।

यहाँ कुछ लोग कहते हैं कि एक जगह में एक ही वस्तु रह सकती है उस जगह दूसरी वस्तु नहीं रह सकती। अतः जीव तथा परमात्मा को साथ माना जाय तो ऐसा तभी माना जा सकता है जब दोनों को संयोग संबंध से संयुक्त मान लिया जावे।

महर्षि दयानन्द इसका बड़ा सुन्दर समाधान करते हैं

'यह नियम समान आकार वाले पदार्थों में घट सकता है। असमानाकृति में नहीं। जैसे लोहा स्थूल, अग्नि सूक्ष्म होता है, इस कारण से लोहे में विद्युत् अग्नि व्यापक होकर एक ही अवकाश में दोनों रहते हैं, वैसे जीव परमेश्वर से स्थूल और परमेश्वर जीव से सूक्ष्म होने से परमेश्वर व्यापक और जीव व्याप्य है। जैसे यह व्याप्य व्यापक संबंध जीव ईश्वर का है वैसा ही सेव्य सेवक, आधाराधेय, स्वामी-भृत्य, राजा-प्रजा और पिता-पुत्र आदि का सम्बन्ध है।'

(सत्यार्थ प्रकाश-सप्तम समुल्लास)

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
रु. 100 के स्थान पर अब रु. 45 में उपलब्ध
सौ प्रतियाँ लेने पर रु. 4000
(डाक खर्च अतिरिक्त)

रु. 15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।

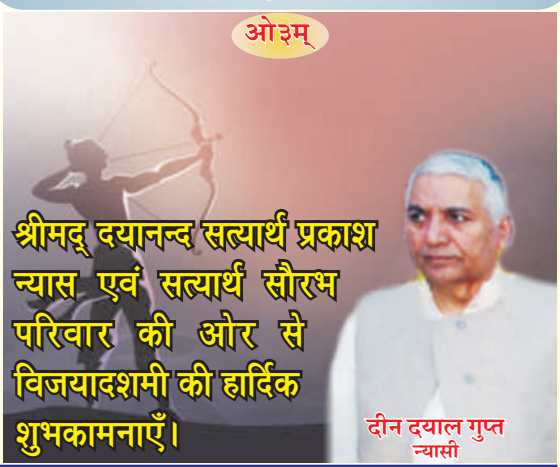

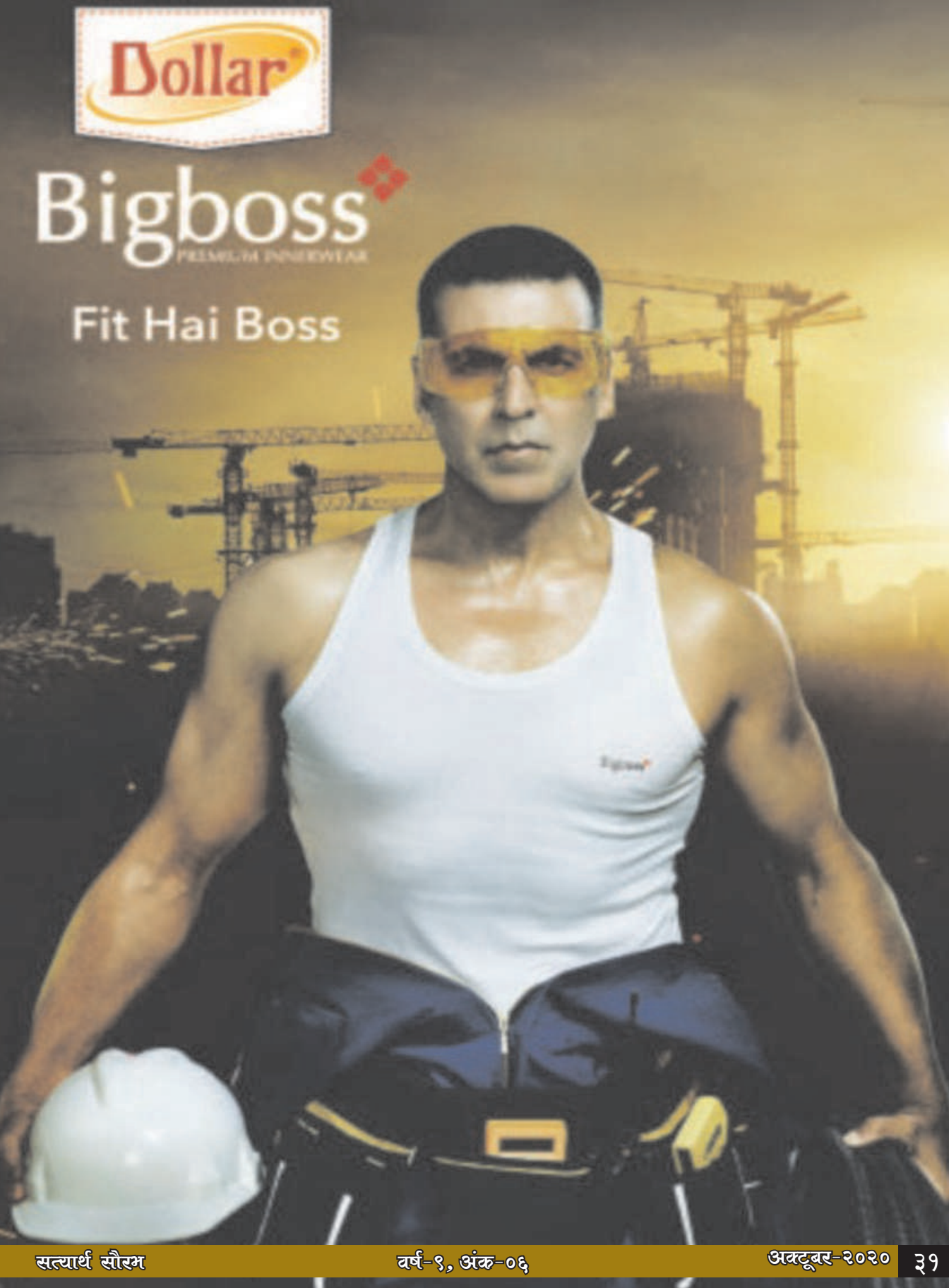
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2020 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

देखो! जितनी मूर्त्तियाँ हैं, उतनी शूरवीरों की पूजा करते तो भी कितनी रक्षा होती। पुजारियों ने इन पाषाणों की इतनी भक्ति की, परन्तु एक भी मूर्त्ति उनके शिर पर उड़के न लगी। जो किसी एक शूरवीर पुरुष की, मूर्त्ति के सदृश सेवा करते, तो वह अपने सेवकों को यथाशक्ति बचाता, और उन शत्रुओं को मारता।

- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३१०

सोमनाथ मन्दिर विध्वंस

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर